महामुनि

श्री आनंदघनजी विरचित तथा मुनि

श्री चिदानंदजी कृत बहोंतेरी संबंधी

पदोना संग्रहनुं पुस्तक.

एमां

अध्यात्मोपदेशक एकशोने उगण्याएंशी

पदोनो समावेश करीने

श्रावक भीमसिंह माणके

श्री मुंबापुरीमध्ये

"निर्णयसागर" प्रेसमां छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे.

संवत् १९४० ना श्रावण शुदि १३ चंद्रवार.

२३०५

प्रस्तावना.

सज्जन वांचनाराउने हुं विनति करुं बुं के श्रीआनंद घनजी महाराजकृत पदोनी पांच सात प्रतिउं मेलवी परंतु प्रत्येक प्रतिमां लखनाराउनी कल्पना प्रमुखथी पाठो जूदाजूदा होवाने लीधे मनःसंतोष पूर्वक यथा स्थित संशोधन ए पदोनुं थयुं नथी तथापि जेटलुं थयुं तेटलुं करी सर्व मली एकशो सात पदो एकत्र करी आ पुस्तक छाप्युंछे. परंतु आ पदोमां केटले एक ठेकाणे आनंदघनजी महाराजनी रचनानो संदेह पडे छे, जेमके त्रेपनमुं पद "सारादिललगाहेवंसीवारेसूं" तथा त्रेशठमुं पद "व्रजनाथसें सुनाथ विण" ए पदनी आठमी गाथा पछीनीगाथाउ तथा एकोतेरमुं पद "अनंतअरूपी अविगत शासतो" तथा छनुमुं पद "ऐसे जिन चरने चित्त ल्याउरे मना" तथा नवाणुं मुं पद "अवधू सोजोगी गुरू मेरा" तथा शोमुं पद "अवधू एसो ज्ञान विचारी" तथा एकशो एकमुं पद "बेर बेर नहिं आवे अवसर" तथा एकशो बेमुं पद "मनुप्यारा मनुप्यारा" तथा एकशो त्रणमुं पद "ए जिनके पाय लाग रे" तथा एकशो चारमुं पद

"ह्वांरे प्रभु जजले मेरा दिल" ए पदोमां कर्त्तानुं नाम यद्यपि आनंद घनजीनुं छे तथापि ते पदोनी रचना वगेरेनी कृतिथी एवुं समजायछे के ए पदो अन्य कोइ जैनी पुरुषनां करेलां ह्शे ? तेमज एकशो छमुं पद "तज मन ह्रख सुखनको संग" ए पद तो प्रत्यक्ष अन्य दर्शनीनुंजकरेलुंछे,एम स्पष्ट जणायछे,ए शिवाय बाकीनां सर्व पदो निःसंशय पणे आनंदघनजी मह्राराज विरचितज छे. ए मुनिराज अत्यंत वैरागी, अध्यात्मज्ञानी,संसार उदासी उत्कृष्ट साधुमार्गमां सुमारें २०० वर्ष उपर ह्ता. एनी प्रसिद्धि घणाएक जैनी जाइउना जाणवामां छे एमना करेलां पदो घणु करीने अध्यात्म विषयिक छे एनो अर्थ सुज्ञ जनोने विचार पूर्वक वांचवाथी समजाय तेवो छे.

तथा कपूरचंदजी अपरनाम चिदानंदजी तेमनां करेला बह्रोतेर पदो पण एमां दाखल कर्यां छे. ते पदोनी रचना पण शोजनिक छे ते विद्वज्जनोने दृष्टीगोचर थवाथी विज्ञात थशे. आ पुस्तक छापता जे कांइ अशुद्धता रह्रेली ह्रोय ते वाचनार साह्रेबो ए मह्रारा उपर क्षमाराखी सुधारी लेवी शुजमस्तु.

॥ अथ ॥

॥ अस्य ग्रंथस्यानुक्रमणिका ॥



॥ प्रथम भैरव रागमां गवातां पदो ॥

॥ श्री आनंदघनायनमः ॥

॥ अथ श्री आनंदघनजी महाराजकृत बहुतेरी आदिकनां पदो प्रारंभः॥

॥ पद पहेलुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ क्या सोवे उठ जाग बाउरे ॥ क्या० ॥ ए आंकणी ॥ अंजली जल ज्युं आयु घटतहे, देत पहोरीया घरिय घाउरे ॥क्या०॥१॥ इंद चंद नागिंद मुनिंद चले, कोण राजापति साह राउरे ॥ भमत भमत भवजलनिधि पायो, भगवंत भजनविन भाउ नाउरे ॥क्या० ॥ २ ॥ कहा विलंब करे अब बाउरे, तरी भवजलनिधि पार पाउरे ॥ आनंदघन चेतनमय मूरति, शुद्ध निरंजन देव ध्याउरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बीजुं ॥ राग वेलाउल एकताली ॥

॥ रे घरियारे बाउरे, मत घरीय बजावे ॥ नरसिर बांधत पाघरी, तुं क्या घरीय बजावे ॥ रे० ॥ १ ॥ केवल काल कलाकले, पैतुं अकल न पावे ॥ अकल कला घटमें घरी, मुज सो घरी भावे ॥ रे० ॥ २ ॥ आतम अनुभव रस भरी, या में और न मावे, आनंदघन अविचल कला, विरला कोइ पावे ॥ रे०॥ ३ ॥

॥ पद त्रीजुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ जीय जाने मेरी सफल घरी री ॥जीय०॥ ए आं कणी ॥ सुत वनिता धन योवन मातो, गरभतणी वेद न वीसरी री ॥जीय०॥१॥ सुपनको राज साच करी माचत, राचत छांह गगन बदरी री आइ अचानक काल तोपचीगो, ग्रहेगोज्युं नाहर बकरी री ॥ जी० ॥ ॥ २ ॥ अतिही अचेत कछु चेतत नाहिं, पकरी टेक हारिलकरी री ॥ आनंदघनहीरो जन छारी, नर मोह्यो माया ककरी री ॥ जीय० ॥ ३ ॥ इति पदं

पद चोथुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ सुहागण जागी अनुभव प्रीत ॥सुहा०॥ ए आं कणी ॥ निंद अज्ञान अनादिकी, मिटगई निजरीत ॥सु० ॥१॥ घट मंदिर दीपक कीयो, सहज सुज्योतिसरूप ॥ आप पराई आपही, ठानत वस्तु अनूप ॥ सु० ॥ २ ॥ कहा दिखावुं औरकूं, कहा समजाउं भोर ॥ तीर अचूक है प्रेमका, लागे सो रहे ठोर ॥सु०॥३॥ नादविलुधो प्राणकूं, गिनेन तृण मृगलोय ॥ आनंदघन प्रभु प्रेमकी, अकथ कहानी कोय ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ पद पांचमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ औधू नट नागरकी बाजी, जाणे न बांभणका

जी ॥औ०॥ ए आंकणी ॥ थिरता एक समयमें ठाने. उपजे विनसे तबही ॥ उलट पलट ध्रूवसत्ता राखे.या हम सुनी न कबही ॥औ० ॥ १ ॥ एक अनेक अनेक एकफुनी. कुंमल कनक सुभावे ॥ जलतरंग घट माटी रविकर. अगनित ताहि समावे ॥ औ० ॥ २ ॥ है नांही है वचन अगोचर, नय प्रमाण सत्तभंगी ॥ निरपख होय लखे कोइ विरला, क्या देखे मतजंगी ॥ औ०॥३॥ सरवमयी सरवंगी माने,न्यारी सत्ता भावे ॥ आनंदघनप्रभु वचनसुधारस.परमारथ सोपावे ॥ओ०॥

॥ पद ७मो ॥

॥ साखी ॥ आतम अनुभव रसीकको,अजब सुन्यो विरतंत ॥ निरवेदी वेदन करे, वेदन करे अनंत ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरि ॥

॥ माहारो बालुडो संन्यासी, देह देवल मठवासी ॥ मा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ईमा पिंगला मारग तज योगी, सुखमना घर वासी ॥ ब्रह्मरंध्रमधि आसनपूरी बाबु, अनहद तान बजासी ॥ मा० ॥ २ ॥ यमनियम आसन जयकारी, प्राणायाम अभ्यासी ॥ प्रत्याहार धारणाधारी, ध्यान समाधि समासी ॥ माहा०॥३॥ मूलउत्तरगुण मुद्राधारी, पर्यंकासन वासी ॥

रेचक पूरक कुंनक सारी, मन इंडीय जयकासी ॥मा० ॥ ४ ॥ थिरता योग युगति अनुकारी, आपो आप विमासी ॥ आतम परमातम अनुसारी, सीजे काज समासी ॥ मा०॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सातमुं ॥

॥साखी॥ जग आशा जंजीरकी,गतिजलटी कुल मोर ॥ जकस्यो धावत जगतमें, रहे बूटो इक गेर ॥ १ ॥

॥ राग आसाउरी ॥

॥ अवधू क्या सोवे तन मठमें, जाग विलोक न घटमें ॥ अवधू०॥ ए आंकणी ॥ तन मठकी परतीत न कीजे, ढहि परे एक पलमें ॥ हलचल मेट खवर ले घटकी, चिन्हे रमता जलमें ॥ अवधू० ॥ १ ॥ मठमें पंचनूतका वासा, सासाधूत खवीसा ॥ छिन छिन तोही छलनकूं चाहे, समजे न बौरा सीसा ॥ अवधू० ॥ २ ॥ शिरपर पंचवसे परमेसर, घटमें सूछम बारी ॥ आप अच्यास लखे कोइ विरला,निरखे ध्रूकी तारी ॥ अवधू० ॥३॥ आशामारी आशनधर घटमें, अजपा जाप जपावे ॥ आनंदघन चेतन मयमूरति, नाथ निरंजन पावे ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद आठमुं ॥

॥ साखी ॥ आतम अनुभव फूलकी, नवली कोउ रीत ॥
नाक न पकरे वासना, कान गृहे न प्रतीत ॥ १ ॥

॥ राग धन्याश्री सारंग ॥

॥ अनुभव नाथकूं क्युं नजगावे ॥ ममता संग सो पाय अजागल, थनतें दूध दुहावे ॥अ०॥१॥ मैरे कहेतें खीज न कीजें, तुंही ऐसी सीखावे ॥ बहोत कहेतें लागत ऐसी, अंगुली सरप दिखावे ॥ अ० ॥ २ ॥ औरनके संग राते चेतन, चेतन आप ब तावे ॥ आनंदघनकी सुमति आनंदा, सिद्ध स्वरूप कहावे ॥अ०॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ नाथ निहारो अपमतासी, वंचक सठ संचक सीरीते, खोटो खातो खतासी ॥ नाथ० ॥ १ ॥ आप विगूचण जगकी हांसी, सयानप कौनबतासी ॥ नि जजन सूरिजन मेला ऐसा, जैसा दुधपतासी ॥ ना थ० ॥ २ ॥ ममता दासी अहित करि हर विधि, वि विध भांती संतासी, आनंदघन प्रभु वीनति मानो, और न हेतु सुमतासी ॥ नाथ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद दशमुं ॥ रागणी टोडी ॥

॥ परम नरममति और न आवे ॥प०॥ मोहन गुन रोहन गति सोहन, मेरी वैरण ऐसें निठुर लखावे ॥ परम०॥ १ ॥ चेतन गात मनातन एतें, मूल वसात जगात बढावे ॥ कौउ न दूती दलाल विशिठी, पारखी प्रेम खरीद बनावे ॥ परम० ॥ २ ॥ जांघ उघारी अपनी कहा एते, विरहजार निस मोही संतावे ॥ एती सुनी आनंदघन नावत, और कहा कोऊ मूंम बजावे ॥ परम० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

पद अगीआरमुं ॥ मालकोस रागणी वेलाउल टोडी ॥

॥ आतम अनुभव रीती वरीरी ॥आ०॥ ए आंकणी ॥ मोर बनाए निजरूप निरूपम तिछन रुचीकर तेग धरीरी ॥आतम०॥१॥ टोप सन्नाह सूरकोबांनो, एकतारी चोरी पहिरीरी ॥ सत्ताथलमें मोह विदारत, ऐ ऐ सुरिजन मुह निसरीरी ॥ आतम० ॥ २ ॥ केवल कमला अपछर सुंदर, गानकरे रस रंग भरीरी ॥ जीत निशान बजाइ विराजे, आनंदघन सर्वंग धरीरी ॥ आतम० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बारमुं ॥

॥साखी॥ कुबुद्धि कुबजा कुटिल गति सुबुद्धि राधिका

नारि ॥ चोपर खेले राधिका, जीते कुबजा हारि ॥१॥

॥ रागणी सामग्री ॥

॥ खेले चतुरगति चौपर ॥ प्रानी मेरो० ॥ खे०॥ ए आंकणी ॥ नरद गंजीफा कौंन गिनितहै,माने न लेखे बुद्धिवर ॥ प्रा० ॥ १ ॥ राग दोष मोहके पासे, आप बनाए हितकर ॥ जेसा दाव परे पासेका, सारी चलावे खिलकर ॥ प्रा०॥ २ ॥ पांच तलेंहै दूआनाई, छका तले है एका ॥ सब मिल होत बराबर लेखा, यह विवेक गिनवेका ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ चऊरासीमांचे फिरे नीली, स्याहन तोरी जोरी ॥ लाल जरद फिर आवे घरमें, कबहुंक जोरी बिछोरी प्रा०॥ ॥ ४ ॥ भाव विवेक के पाऊ न आवत,तव लग काची बाजी ॥ आनंदघन प्रभु पाऊ देखावत, तो जीते जीय गाजी ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद तेरमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ अनुभव हमतो रावरी दासी ॥अ०॥ आइ कहांतें माया ममता जानु न कहांकी वासी ॥अनु०॥१ ॥ रीजपरे वाके संग चेतन, तुमक्युं रहत उदासी ॥ वरज्यो न जाय एकांत कंतकों, लोकमें होवत हासी ॥ अनु० ॥ २ ॥ समजत नाही निठुर पति एती, पल

एक जात हमासी ॥ आनंदघन प्रभु घरकी समता, अटकली और लबासी ॥ अनु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चौदमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ अनुभव तूं है हेतु हमारो ॥ अनु० ॥ ए आंकणी ॥ आय उपाय करो चतुराई, औरको संग निवारो ॥ अ० ॥ १ ॥ तृष्णा रांम जांमकी जाइ, कहाघर करे सवारो ॥ सठ ठग कपट कुटुंबही पोखे, मनमें क्युं न विचारो ॥ पाठांतर ॥ उनकी संगति वारों ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ कुलटा कुटिली कुबुधि संग खेलके, अपनी पत क्युं हारो ॥ आनंदघन समता घर आवे, वाजे जीत नगारो ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पंदरमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ मेरे घट ग्यान भानु भयो भोर ॥मेरे०॥ चेतन चकवा चेतन चकवी,भागो विरहको सोर ॥मेरे०॥१॥ फैली चिहुंदिस चतुरा भाव रुचि, मिटयो भरम तम जोर ॥ आपकी चोरी आपही जानत, औरे कहित न चोर ॥ मेरे० ॥ २ ॥ अमल कमल विकच भये भूतल, मंदविषय ससिकोर ॥ आनंदघन एक वल्लभ लागत, और ॥ न लाख किरोर ॥ मेरे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद शोलमुं ॥ रागणी मारू ॥

॥ निसदिन जोउं तारी वाटडी, घरें आवोरे ढोला ॥ निस० ॥ मुज सरिखा तुज लाख है, मैरे तूंही ममोला ॥ निस० ॥ १ ॥ जवहरी मोल करे लालका, मेरा लाल अमोला ॥ ज्याके पटंतर को नही. उसका क्या मोला ॥ निस० ॥ २ ॥ पंथ निहालत लोयणे, इग लागी अमोला ॥ जोगी सुरत समाधीमें, मुनि ध्यान जकोला ॥ निस०॥ ३ ॥ कौनसुनै किनकूं कहूं, किम मांडूं मैं खोला ॥ तेरे मुख दीठे टलें.मेरे मनका चोला ॥ निस०॥ ४ ॥ मित्त विवेक वातें कहै, सुमता सुनि बोला ॥ आनंदघन प्रभु आवसे, सेजडी रंग रोला ॥ निस० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तरमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ ठोराने क्युं मारेछे रे, जाये काटचा मेण ॥ छोरोछे म्हारो बालो भोलो, बोलेछे अमृत वयण ॥ छोरा० ॥ १ ॥ लेय लकुटिया चालण लागो, अबकांइ फूटाछे नयण ॥ तूंतो मरण सिराणें सूतो, रोटी देसे कोण ॥ छोरा० ॥ २ ॥ पांच पचीश पचासां ऊपर, बोलेछे सूधा वेयण ॥ आनंदघन प्रभु दास तिहारो, जनम जनमके सयण ॥ छोरा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अढारमुं ॥ मालकोश राग ॥ रागणी गोडी ॥

॥ रीसानी आप मनावो रे. विच्च वसीठ न फेर ॥ री०॥ सौदा अगम है प्रेमका रे.परख न बूजे कोय॥ जे देवाही गम पडे प्या रे, और दलाल न होय ॥ रीसा० ॥ १ ॥ दो वातां जीयकी करो रे, मेटो मनकी आंट ॥ तनकी तपत बूजाइयें प्या रे, बचन सुधार स ठांट ॥ रीसा० ॥ २ ॥ नेक नजर निहारीयें रे. उ जर न कीजें नाथ ॥ तनक नजर मुजरे मले प्या रें. अजर अमर सुख साथ ॥ रीसा० ॥ ३ ॥ निसि अं धीयारी घनघटा रे, पाउं न वाटके फंद ॥ करुणा क रो तो वहुं प्या रे. देखुं तुम मुख चंद ॥ रीस० ॥ ॥ ४ ॥ प्रेम जहां डुविधा नही रे, नही कुराहीतरा ज ॥ आनंद घन प्रभु आय बिराजे, आपही समता सेज ॥ रीसा० ॥ ५ ॥इति पदं ॥

॥ पद उगणीशमुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ डुलह नारी तूं बडी बावरी, पीया जागे तूं सो वे ॥ पिया चुतर हम निपट अयांनी, न जानुं क्या होवे ॥ डुल० ॥ १ ॥ आनंदघन पिया दरस पिया सें, खोल घूंघट मुख जोवे ॥ डुल० ॥ २ ॥इति पदं॥

॥ पद वीशमुं ॥ रागणी गोडी आशाउरी ॥

॥ आज सुहागन नारी,औधू आज० ॥एआंकणी॥ मेरे नाथ आप सुध लीनी, कीनी निज अंगचारी ॥ ॥ औधू० ॥ १ ॥ प्रेम प्रतीत राग रुची रंगत, पहिरे जीनी सारी ॥ महिंदी नक्त रंगकी राची, नाव अंजन सुख कारी ॥ औधू० ॥ २ ॥ सहिज स्वनाव चूरी मैं. पेनी, थिरता कंकन नारी ॥ ध्यान उरवसी उरमें राखी, पिय गुनमाल आधारी ॥ औधू० ॥ ३ ॥ सुरत सिंदूरमांग रंग राती, निरतें वेणी समारी ॥ उपजी ज्योत उद्योत घट त्रिनुवन, आरसी केवल कारी ॥ औधू० ॥ ४ ॥ उपजी धुनि अजपाकी अनहद, जीत नगारे वारी ॥ जडी सदा आनंदघन बरखत, विन मोर एकन तारी ॥ औधू० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥ रागणी गोडी ॥

॥ निसानी कहा बतावुं रे, तेरो अगम अगोचर रूप ॥ए आंकणी॥ रूपी कहुंतो कबु नही रे,बंधे कैसे अरूप ॥ रूपारूपी जो कहू प्या रे,ऐसे न सिद्ध अनूप ॥निसा० ॥१॥ शुद्ध सनातन जो कहूं रे,बंध न मोक्ष विचार ॥ न घटे संसारी दिसा प्या रे, पुण्य पाप अवतार ॥ निसा० ॥ २ ॥ सिद्ध सनातन जो कहूं रे,

उपजे विनसे कौंन ॥ उपजे विनसे जो कहूं प्या रे, नित्य अबाधित गौंन ॥ निसा० ॥ ३ ॥ सर्वंगी सब नय धनी रे, माने सब परमान ॥ नयवादी पल्लो ग्रही प्या रे, करे लराइ गन ॥ निसा० ॥ ४ ॥ अनुभव अ गोचर वस्तुहे रे, जांनबो एही रे इलाज ॥ कहन सुनन कों कछू नही प्या रे, आनंदघन महाराज॥ निसा०॥५॥

॥ पद बावीशमुं ॥ रागणी गोडी ॥

॥ विचारी कहा विचारें रे, तेरो आगम अगम अ थाह ॥वि०॥ए आंकणी ॥ बिनु आधे आधा नही रे, बिनआधे आधार ॥ मुरगी बिन इंडा नहीं प्या रे, या बिन मुरगकी नार ॥ वि० ॥ १ ॥ भुरटा बीज विना नही रे, बीज न भुरटा टार ॥ निसि बिन दिवस घटे नही प्या रे, दिन बिन निसि निरधार ॥ वि० ॥ २ ॥ सिद्ध संसारी बिन नही रे, सिद्ध बिना संसार ॥ कर ता बिन करनी नही प्या रे, बिन करनी करतार ॥ ॥ वि० ॥ ३ ॥ जामण मरण बिना नही रे, मरण न जनम विनास ॥ दीपक बिन परकाशता प्या रे, बिन दीपक परकाश ॥ वि० ॥ ४ ॥ आनंदघन प्रभु वचन की रे, परणत धरो रुचीवंत ॥ शाश्वत भाव विचारके प्या रे, खेलो अनादि अनंत ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रैवीशमुं ॥ राग आसाउरी ॥

॥ अवधू अनुभव कलिका जागी, मति मेरी आतम समरन लागी ॥अ०॥ ए आंकणी ॥ जाये न कबहुं उरढिग नेरी, तेरी विनिता वेरी ॥ मायाचेरी कुंटुंब करी हाथें, एक म्हेढदिन घेरी ॥ अ० ॥ १ ॥ जनम जरा मरन वस सारी, असरन दुनियां जेती ॥ देढव कांइन बागमें मीयां, किसपर ममता एती ॥ ॥ अ० ॥ २ ॥ अनुभव रसमें रोग न सोगा, लोकवाद सब मेटा ॥ केवल अचल अनादि अबाधित,शिव शंकरका भेटा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वर्षा बुंद समुद समानी, खबर नपावे कोई ॥ आनंदघनव्हे ज्योति समावे, अलख कहावे सोई ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥ राग गिरिरागमां ॥

॥ मुने म्हारो कब मिलसे मनमेलू ॥मु०॥ मनमेलुविण केल न कलियें,वाले कवल कोइ वेलू ॥मु०॥१॥ आप मिल्याथी अंतर राखे सुमनुष्य नही ते लेलू ॥ आनंदघन प्रभु मन मलियाविण,कोनवि विलगे चेलू॥

॥ पद पच्चीशमुं ॥ राम गिरिरागमां ॥

॥ क्यारे मुने मिलसे माहारो संत सनेही,क्यारे०॥ ॥ टेक ॥ संतसनेही सूरिजन पाखे, राखे न धीरज दे

ही ॥ क्यारे० ॥ १ ॥ जण जण आगल अंतरगतनी, वातडली कहुं केही ॥ आनंदघन प्रभु वैद्य वियोगें, किम जीवे मधुमेही ॥ क्या० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नवीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू क्या मागुं गुनहीना, वेगुन गनिन प्रवीना ॥ अ० ॥ एआंकणी ॥ गाय न जानुं बजाय न जानुं, न जानुं सुर भेवा ॥ रीज न जानुं रीजाय न जानुं, न जानुं पदसेवा ॥ अ० ॥ १ ॥ वेद न जानुं किताब न जानुं, जानुं न लक्षण छंदा ॥ तरकवादविवाद न जानुं, न जानुं कवि फंदा ॥ अ० ॥ २ ॥ जाप न जानुं जुवाब न जानुं, न जानुं कवि वाता ॥ भाव न जानु भगति न जानुं, जानुं न सीरा ताता ॥ अ० ॥ ३ ॥ ग्यान न जानुं विग्यान न जानुं, न जानुं भज नांमा ॥ पाठांतर ॥ न जानुं पद नामा ॥ आनंदघन प्रभुके घरद्वारें, रटन करुं गुणधामा ॥ अ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अवधू रामराम जगगावे, विरला अलख लखावे ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ मतवाला तो मतमें माता, मठ वाला मठराता ॥ जटा जटाधर पटा पटाधर, छता छताधर ताता ॥ अ० ॥ १ ॥ आगम पढि आगमधर

शाके, माया धारी ठाके ॥ दुनियांदार दुनीसें लागे, दासा सब आशाके ॥ अ० ॥ २ ॥ बहिरातम मूढा जगजेता, मायाके फंद रहेता ॥ घट अंतर परमातम ध्यावे, दुरलन प्राणी तेता ॥ अ० ॥ ३ ॥ खगपद ग गन मीनपद जलमें, जो खोजे सो बौरा ॥ चित पं कज खोजे सो चिन्हे, रमता आनंद नौरा ॥अ०॥४॥

॥ पद अठावीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ आशा औरनकी क्या कीजें, ग्यान सुधारस पीजे ॥आशा०॥ए आंकणी॥ जटके द्वार द्वार लोकनके, कूकर आशाधारी ॥ आतम अनुनव रसके रसीया, उतरें न कबहुं खुमारी ॥ आशा० ॥ १ ॥ आशा दासीके जे जाये, ते जन जगके दासा ॥ आशा दासी करे जे नायक, लायक अनुनव प्यासा ॥ आशा० ॥ ॥ २ ॥ मनसा प्याला प्रेम मसाला, ब्रह्म अग्निपर जाली ॥ तन नाठी अवटाइ पीये कस, जागे अनुनव लाली ॥ आशा० ॥ ३ ॥ आगम पीयाला पीयो मत वाला, चिन्ही अध्यातम वासा ॥ आनंदघन चेतन व्हे खेले, देखे लोक तमासा ॥आशा०॥४॥इतिपदं ॥

॥ पद उगणत्रीशमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ अबधूनाम हमारा राखे, सो परम महारस चा

ये ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ नहीहम पुरुषा नही हम नारी, वरनन जांत हमारी ॥ जातिन पांतिन साधन साधक, नही हम लघु नही जारी ॥ अ० ॥ १ ॥ नही हम ताते नही हम शीरे, नहीदीर्घ नही छोटा ॥ नही हम जाइ नही हम जगिनी, नही हम बाप न बेटा ॥ अ० ॥ २ ॥ नही हम मनसा नही हम शब्दा, नही हम तरणकी धरणी ॥ नही हम जेख जेख धर नांही, नही हम करता करणी॥अ०॥३॥ नही हम दरशन नही हम परशन, रसन गंध कछु नांहीं ॥ आनंदघन चेतन मय मूरति, सेवकजन बलि जांहीं ॥४॥

॥ पद त्रीशमुं ॥ राग आसाउरी ॥

॥ साधोजाई समता रंग रमीजें, अवधू ममता संग न कीजें ॥सा०॥ एआंकणी ॥ संपति नांहिं नांहिं ममता में, ममतामां मिसमेटे ॥ खाटपाट तजी लाख खटाउ, अंत खाखमें लेटे ॥ सा० ॥ १ ॥ धन धरतीमें गाडेबौरे, धूर आप मुख ल्यावे ॥ मुखक साप होवेगो आखर, तातें अलछि कहावे ॥ सा० ॥ २ ॥ समता रतनागरकी जाई, अनुजव चंद सुजाई ॥ कालकूट तजी जावमें श्रेणी, आप अमृत ले आई ॥सा० ॥ ३ ॥ लोचन चरन सहस चतुरानत, इनतें बहुत

नराई ॥ आनंदघन पुरुषोत्तम नायक, हितकरी कंठ लगाई ॥ सा० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥ रागणी श्रीरागणी ॥

॥ कित जांनम तें हो प्रान नाथ, इत आय निहारो घरको साथ ॥कि०॥१॥ उत माया काया कब न जात, यहु जड तुम चेतन जग विख्यात ॥ कि०॥ उत करम जरम विष वेलि संग, इत परम नरम मति मेलि रंग ॥ कि० ॥ २ ॥ उत काम कपट मद मोह मान, इत केवल अनुनव अमृत पान ॥ अलि कहे समता उत दुःख अनंत, इत खेल हुं आनंदघन वसंत ॥ कि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥ रागणी सामेरी ॥

॥ निठुर नये क्यूं ऐसें, पीया तुम ॥ निठुर०॥ ए आंकणी ॥ मेंतो मन वच क्रमकरी राउरी,राउरी रीत अनेसें ॥नि०॥१॥ फूलफूल नमर कैसी नांउरी नरत हूं, निवहे प्रीत क्यूं ऐसें ॥ मेंतो पीयुतें ऐसी मलि आली, कुसुम वास संग जैसें ॥ नि० ॥ २ ॥ ऐंठी जांन कहा परे एती, नीर निवहियें नैसें ॥ गुन अवगुन न विचारो आनंद घन,कीजीयें तुमहो तैसें॥३॥

॥ पद तेंत्रीशमुं ॥ रागणी गोडी ॥

॥ मिलापी आंन मिलावो रे, मेरे अनुनव मीठडे मित्त ॥मि०॥ चातक पीउपीउ रटेरे, पीउ मिलावो न आंन ॥ जीव पीवन पीऊ पीऊ करे प्यारे, जीउ नीउ आंन ए आंन ॥ मि० ॥ १ ॥ डुखीयारी निस दिन रहूं रे, फिरुं सब सुधि बुद्धि खोय ॥ तन मनकी कबहूं लहूं प्यारे, किसें दिखाउं रोय ॥ मिल०॥२॥ निसि अंधारी मुहि हसेरे, तारे दांत दिखाय ॥ नादो कादो में कीयो प्यारे, असुयन धार वहाय ॥ मिला०॥३॥ चित्तचातक पीऊ पीऊ करे रे,प्रणमे दोकर पीस ॥ अबलांसुं जोरावरी प्यारें, एती न कीजें रीस ॥ मिला० ॥ ४ ॥ आतुर चातुरता नहीं रे, सुनि समता टुक बात ॥ आनंदघन प्रभु आय मिले प्यारे, आजघरे हर नांत ॥ मिल० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥ रागणी गोडी ॥

॥ देखो आली नट नागरको सांग ॥ दे० ॥ और ही और रंग खेलति तातें, फीका लागत अंग ॥ दे० ॥ १ ॥ औरह नो कहा दीजें बहुत कर, जीवित है इह ढंग ॥ मैरो और विच अंतर एतो, जेतो रूपे रंग ॥ दे० ॥ २ ॥ तनु सुध खोय घूमत मन ऐसें, मा

मु कबुइक खाई जंग ॥ एते पर आनंदघन नावत, और कहा कोउ दीजे संग ॥ दे० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥ दीपक रागणी कांनरो ॥

॥ करे जारे जारे जारेजा ॥करे०॥ सज सणगार बनाये नूखन, गइ तब सूनी सेजा ॥करे०॥१॥ विरह व्यथा कबु ऐसी व्यापति, मानूं कोइ मारति बेजा ॥ अंतक अंत कहांलूं लेगो प्यारे, चाहे जीव तूं लेजा॥ करे०॥ २ ॥ कोकिल काम चंद चूतादिक, चेतन मतहे जेजा ॥ नवल नागर आनंदघन प्यारे, आइ अमित सुख देजा ॥ करे० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥ राग मालसिरि ॥

॥ वारे नाह संग मेरो, यूंही जोवन जाय ॥ ए दिन हसन खेलनके सजनी, रोते रेन विहाय ॥ वारे० ॥ १ ॥ नग नूषणसें जरी जातरी, मो तन कबु न सुहाय ॥ इक बुद्ध जीयमें ऐसी आवत है, लीजें री विख खाय ॥ वारे० ॥ २ ॥ नां सोवतहे लेत उसास न, मनहीमें पिबताय ॥ योगनी हुयके निकसूं घरतें, आनंदघन समजाय ॥ वारे० ॥ ३ ॥ इतिपदं॥

॥ पद सडत्रीशमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ ताजोगें चित ल्याउंरे वाला ॥ ता० ॥ समकित

दोरी शील लंगोटी, घुलघुल गांठ घुलाउं ॥ तत्व गु
फामें दीपक जोउं, चेतन रतन जगाउंरे वाला ॥ ता०
॥ १ ॥ अष्ट करम कंडेकी धूनी, ध्याना अगन जला
उं ॥ उपशम छणणें जसम छणाउं, मलीमली अंग
लगाउंरे वाला ॥ ता०॥ २ ॥ आदगुरुका चेला होकर,
मोहके कांन फरांउं ॥ धरम शुकल दोउ मुद्रा सोहे,क
रुणा नाद बजाउंरे वाला ॥ ता० ॥ ३ ॥ इह विध यो
ग सिंहासन बैठां, मुगति पुरीकूं ध्याउं ॥ आनंदघन
देवेंद्रसे जोगी,बहुर न कलिमें आउंरे वाला॥ता०॥४॥

॥ पद अडत्रीशमुं ॥ राग मारू ॥

॥ मनसा नटनागरसूं जोरीहो ॥म०॥ नटनागरसूं
जोरी सखोहम, और सबनसों तोरीहो ॥म०॥१॥ लो
क लाजसूं नांहीं न काज, कुल मरयादा छोरीहो ॥
लोक बटाउ हसो विरानो, अपनो कहत न कोरीहो ॥
म० ॥ २ ॥ मात तात अरु सज्जन जाति, वात क
रतहे जोरीहो ॥ चाखे रसकी क्युंकरि छूटे, सूरिजन
सूरिजन टोरीहो ॥ ३ ॥ औरहनो कहा कहावत
औरपें,नांहि न कीनी चोरीहो ॥ काछ कछयो सो ना
चत निवहे, और चाचर चर फोरीहो ॥ म० ॥ ४ ॥

ग्यानसिंधू मथित पाई,प्रेम पीयूष कटोरीहो ॥ मोदत आनंदघन प्रभु शसिधर, देखत दृष्टी चकोरीहो ॥५॥

॥ पद उंगणचालीशमुं ॥ राग जयजयवंती ॥

॥ तरसकी जई दइकौ दइकी सवारीरी,तीक्ष्ण कटाक्ष छटा लागत कटारीरी ॥तर०॥१॥ सायक लायक नायक प्रानकोपहारीरी, काजर काजन लाज बाज न कहुं वारीरी ॥तर०॥२॥ मोहनी मोहन ठग्यो जगत ठगारीरी,दीजीयें आनंदघन दाह हमारीरी ॥तर०॥३॥

॥ पद चालीशमुं ॥ रागणी आसाउरी ॥

॥ मीठडो लागे कंतडोने, खाटो लागे लोक ॥ कंतविहूणी गोठडी ते, रण मांहे पोक ॥ मी० ॥ १ ॥ कंतडामें कामण, लोकडामें शोक ॥ एकठामें केम रहे, दूध कांजी थोक ॥ मी० ॥ २ ॥ कंतविण चउगति, आणुं मानु फोक ॥ उघराणी सिरड फिरड, नाणु तेजे रोक ॥ मी० ॥ ३ ॥ कंतविना मति मारी, अहवाहडानी बोक ॥ धोक दुं आनंदघन, अवरने ढोक ॥ मी० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥ राग वेलाउल मारू ॥

॥ पीया विनुं सुद्धि बुद्धि भूली हो, आंख लगाइ दुःख महेलके, जरूखे झूली हो ॥ पीया० ॥ १ ॥

हसती तबहुं बिरांनीयां, देखी तन मन छीज्यो हो ॥ समजी तब एती कही, कोइ नेह न कीज्यो हो ॥ ॥ पीया० ॥ २ ॥ प्रीतम प्राणपति विना, प्रीया कैसे जीवे हो ॥ प्रान पवन विरहा दसा, भूयंगम पीवे हो ॥ पीया० ॥ ३ सीतल पंखा कुम कुमा, चंदन कहा लावे हो ॥ अनल न विरहानल यहै, तन ताप ब ढावे हो ॥ पीया० ॥ ४ ॥ फागुन चाचर इक नि सा, होरी सिरगांनी हो ॥ मैरे मन सब दिन जरे, तन खाख उडानी हो, ॥ पीया० ॥ ५ ॥ समता म हेल बिराजहै, वाणी रस रेजा हो ॥ बलिजाउं आ नंदघन प्रभु, ऐसें निठुर न व्हेजा हो ॥पीया०॥६॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥ राग सारंग आशाउरी ॥

॥ अब हम अमर भये न मरेंगें ॥अ०॥ या का रन मिथ्यात दीयो तज, क्युंकर देह धरेंगे ॥ अ० ॥ १ ॥ राग दोस जग बंध करत है, इनको नास करेंगे ॥ मखो अनंत कालतें प्रानी, सो हम का ल हरेंगे ॥ अ० ॥ २ ॥ देह विनासी हूं अविनासी, अपनी गति पकरेंगे ॥ नासी जासी हम थिर वासी, चोखे व्है निखरेंगे ॥ अ० ॥ ३ ॥ मखो अ नंत वार बिन समज्यो, अब सुख दुःख वीसरेंगे ॥

आनंदघन निपट निकट अक्षरदो,नहीं समरे सो मरेंगे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद तेंतालीशमुं ॥ रागणी टोडी ॥

॥ मेरीतुं मेरीतुं काहीं मरेरी ॥मेरी०॥ कहे चेतन समता सुनि आखर,और मैढदिन जूठ लरेरी ॥मेरी०॥ ॥१॥ एतीतो हुं जानुं निहचें,रीरी परन जराउ जरेरी ॥ जबअपनो पद आप संभारत,तब तेरे परसंग परेरी ॥मेरी०॥ औसर पाइ अध्यातम सैली,परमातम निज योग धरेरी ॥ सक्ति जगावे निरूपम रूपकी,आनंदघन मिलि केली करेरी ॥ मेरी०॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥ रागणी टोडी ॥

॥ तेरीहुं तेरीहुं एती कहूंरी, इन बातनमें दगो तुं जाने, तो करवत कासी जाय ग्रहूंरी ॥ तेरी०॥१॥ वेद पुराण कितेब कुरानमें, आगम निगम कछु न लहूंरी ॥ वाचा फोर सिखाइ सेवनकी, में तेरे रस रंग रहूंरी ॥ तेरी०॥ २ ॥ मैरे तो तुं राजी चहियें, औरके बोलमें लाख सहूंरी ॥ आनंदघन पिया वेग मिलो प्यारे, नहीं तो गंग तरंग वहूंरी ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

॥ पद पीस्तालीशमुं ॥ रागणी टोडी ॥

॥ ठगोरी भगोरी लगोरी जगोरी ॥एआंकणी॥ ममता

माया आतम लेमति,अनुनव मेरी और दगोरी॥ठगो०॥१॥ व्रातन तातन घातन जातन,गातन वातन लागत गोरी॥ मेरे सबदिन दर्शन परसन,तान सुधारस पान पगोरी ॥ ठगो० ॥ २ ॥ प्रान नाथ बिछुरेकी वेदन, पारन पावुं अथग थगोरी ॥ आनंदघन प्रनु दरशन औघट, घाट उतारन नाव मगोरी ॥ ठगो० ॥ ३ ॥

॥ पद बेतालीशमुं ॥ रागणी टोडी ॥

॥ चेतन चतुर चोगान लरीरी॥ चे० ॥ जीत लै मोह रायको लसकर, मिसकर बांफ अनाद धरीरी ॥चे०॥ ॥ १ ॥ नांगी काढल ताडले डुसमन, लागे काची दो य घरीरी॥ अचल अबाधित केवल मनसुफ, पावे शिव दरगाह जरीरी ॥ आ० ॥ २ ॥ और लराई लरे सो बौरा, सूरपबाडे नांउं अरीरी॥ धरम मरमक हा बूजे न औरें, रहे आनंदघन पद पकरीरी॥आ०॥३॥

॥ पद शडतालीशमुं ॥ रागणी टोडी ॥

॥ पिय बिन निस दिन जूरुं खरीरी ॥ पिय० ॥ ए आंकणी॥ लहुडी वडीकी कहांनी मिटाइ ॥ द्वारतें आंखें कवन टरीरी ॥पिय०॥१॥ पट नूखन तन नौक न उंढे, नावे न चोंकी जराउ जरीरी॥ शिवकमला आ ली सुख न उपावत, कौन गिनत नारी अमरीरी॥पिय०

॥ २ ॥ सास विसास उसास न राखे, निणद निगोरी जोर लरीरी ॥ और तबीब न तपत बुजावत,आनंदघन पीयूष जरीरी ॥ पिया० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥ राग मारू जंगलो ॥

॥ मायडी मुने निरपख किणही न मूकी ॥ निर पख० ॥ माय० ॥ निरपख रहेवा घणुंही जूरी. धीमे निजमति फूकी ॥माय०॥१॥ योगीयें मलीने योगण कीनी, यतियें कीनी यतणी ॥ जगतें पकडी जगतांणी कीनी,मतवाले कीनी मतणी ॥माय०॥२॥ केणे मूकी केणे लूंची, केणे केसें लपेटी ॥ एक पखोमें कोइ न देख्यो, वेदना किणही न मेटी ॥ माय०॥ ३ ॥ रामज णी रही मान जणाई,अरिहंत पाठ पढाई ॥ घरघरने हुं धंधे वलगी, अलगी जीव सगाई ॥ माय० ॥ ४ ॥ केणे थापी केणे उथापी, केणे चलावी केणे राखी ॥ केणे जगाडी केणे सूआडी, कोईनु कोई नथी साखी ॥ माय० ॥ ५ ॥ धींग डुरबलने ठेलीजे, ठींगे ठींगो वाजे ॥ अबला ते किम बोली सकिये,वड योद्धाने राजे ॥ माय० ॥ ६ ॥ जे जे कीधुं जे जे कराव्युं, तेह कहेती हूं लाजुं ॥ थोडे कहे घणु प्रीछी लेजो, घरसूं तीरथ नहीं बीजुं ॥ माय० ॥ ७ ॥ आपवीती कहेतां

रीसावे, तेथी जोर न चाले ॥ आनंदघन वालो बा
हडी जाले, बीजुं गयलुं पाले ॥ माय० ॥७॥ इति ॥

॥ पद उगणपच्चाशमुं ॥ राग सोरठ ॥

॥ कंचन वरणो नाहरे,मोने कोय मिलावो ॥कं०॥
अंजन रेखन आंख न नावे, मंजन शिर पडो दाह रे
॥ मोनेकोय० ॥ १ ॥ कौन मेंन जांने पर मननी, वेद
न विरह अथाह ॥ थरथर धूजे देहडी मारी, जिम
वानर जरमाह रे ॥ मोने० ॥ २ ॥ देहन गेहन नेह
न रेहन, नावे न दूहा गाहा ॥ आनंदघन वालो बा
हडी जाले, निस दिन धरुं उमाहा रे ॥मोने०॥३॥

॥ पद पच्चाशमुं ॥ राग धन्या श्री ॥

॥ अनुनव प्रीतम कैसे मनासी ॥अ०॥ छिन निर
धन सधन छिन निर्मल ॥ समल रूप बतासी ॥अनु०
॥ १ ॥ छिनमें शक्र तक्र फुनि छिनमें, देखुं कहत
अनासी ॥ विरजन विच्च आपा हितकारी, निरधन
जूठ खतासी ॥ अनु० ॥ २ ॥ तोहितूं मैरो मैंहितुं
तेरी,अंतर काहैं जनासी ॥ आनंदघन प्रनु आन मि
लावो, नहीतर करो धनासी ॥ अनु० ॥ ३ ॥

॥ पद एकावनमुं ॥ राग धमाल ॥

॥ जाडंकी राति कातीसी वहे, छातीय छिन छिनं

छीना ॥नाडुं०॥१॥ प्रीतम सब छबी निरखके हो,पीउ पीउ पीउ कीना ॥ वाहीबिच चातक करें हो, प्रान हरे परवीना ॥ना०॥२॥ एकनिसि प्रीतम नांउंकी हो, विसर गई सुधनाउ ॥ चातक चतुरविना रही हो, पीउ पीउ पीउ पीउ पाउ ॥नाडु०॥३॥ एक समे आलापके हो, कीने अडाने गान ॥ सुघर बपीहा सुर धरे हो, देतहै पीउ पीउ तान ॥ नाडु० ॥ ४ ॥ रात विनाव विलात है हो, उदित सुनाव सुनान ॥ सुमता साच मते मिले हो, आए आनंदघन मान॥ नाडुं० ॥ ५ ॥

॥ पद बावनमुं॥ राग जय जय वंती ॥

॥ मेरे प्रान आनंदघन तांन आनंद घन ॥ ए आंकणी ॥ मात आनंदघन तात आनंदघन, गात आनंदघन जात आनंदघन ॥ मे० ॥ १ ॥ राज आनंदघन काज आनंदघन, साज आनंदघन लाज आनंदघन ॥ ॥ मे० ॥ २ ॥ आज आनंदघन गाज आनंदघन, नाज आनंदघन लाज आनंदघन ॥ मे० ॥ ३ ॥इति पदं॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥ रागणी सोरठ मुलतानी ॥

॥ नटरागिणी सहेली ॥

॥ सारा दिल लागाहै बंसी वारेसूं ॥ बंसीवारेसूं प्रान प्यारेसूं ॥ सा० ॥ मोर मुकुट मुकराकृत कुंमल,

पीतांबर रटवारेमें ॥सा०॥१॥ चंद चकोर नये प्रान पपईया, नागरिनंद दूलारेमूं ॥ इन सखीके गुन गंध्रप गावे, आनंदघन उजीयारेमूं ॥ सा० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पद चोपनमुं ॥ राग प्रनाती आशाउरी ॥ रातडी रमीने किहांथी आविया ॥ ए देशी ॥

॥ मूलडो थोडो नाइ व्याजडो घणो रे, किम करी दीधोरे जाय ॥ तलपद पूंजीमें आपी सघली रे, तोहे व्याज पूरो नवि थाय ॥मू०॥१॥ व्यापार नागो जलत्र ट थल वटें रे, धीरे नहीं नीसांनी माय ॥ व्याज छो डावी कोइ खंधा परठवे रे, तो मूल आपुं सम खाय ॥मू०॥२॥ हाटडुं मांडुं रूडा माणक चोकमां रे, सा जनीयांनो मनडो मनाय ॥ आनंदघन प्रभु शेठ शिरो मणी रे,बाहडी झाले जो रे आय ॥मू०॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद पंच्चावन्नमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ चेतन आपा कैसे लहोई ॥चे०॥ सत्ता एक अ खंम अबाधित, इह सिद्धांत पख जोई ॥चे०॥१॥ अ न्वय अरु व्यतिरेक हेउको, समज रूप भ्रम खोई ॥ अ रोपित सब धर्म और है, आनंदघन तत सोई ॥चे०॥२॥

॥ पद छपन्नमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ बालुडी अबला जोर किश्युं करे, पीउडो पर

घर जाय ॥ पूरवदिसि पश्चिमदिसि रातडो, रवी अ
स्तंगत थाय ॥ बा० ॥ १ ॥ पूनम ससी सम चेतन
जाणीयें, चंद्रातप सम नाण ॥ वादल नर जिम दल
थिति आणीयें, प्रकृति अनावृत्त जाण ॥ बा० ॥ २ ॥
परघर नमतां स्वाद किसो लहे, तनधन यौवन हा
ण ॥ दिन दिन दीसे अपयश वाधतो, निज जन न
माने काण ॥ बा० ॥ ३ ॥ कुलवट डांफी अवट कवट
पडे, मन मेहूताने घाट ॥ आंधो आंधें मिल्ले बेजण,
कोण देखाडे वाट ॥ बा० ॥ ४ ॥ बंधु विवेकें पीऊडो
बूजव्यो, वाय्यो परघर संग ॥ आनंदघन समताघर
आणे, वाधे नव नव रंग ॥ बा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ देखो एक अपूरव खेला, आपही बाजी आप
ही बाजीगर ॥ आप गुरु आप चेला ॥ देखो०॥१॥
लोक अलोक बिच आप बिराजित, ग्यान प्रकाश
अकेला ॥ बाजी डांफ तहां चढ बैठे, जिहां सिंधूका
मेला ॥ देखो०॥२ ॥ वाग्वाद खटनाद सहुमें, किसके
किसके बोला ॥ पाहणको नर कांही उगावत, एक तारे
का चोला ॥ देखो०॥३॥ षटपद पदके जोगसिरिखस,

क्योंकर गजपद तोंना ॥ आनंदघन प्रभु आय मिलो तुम, मिट जाय मनका जोला ॥ देखो० ॥ ४ ॥

॥ पद अठावनमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ प्यारे आय मिलो कहाऐंते जात, मेरो विरह व्यथा अकुलात गात ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ एक पैसाभर न जावेनाज, न नूषण नही पट समाज ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ मोहन रास न दूसन तेरी आसी. मदनो जय है घरकी दासी ॥ प्यारे०॥ ३ ॥ अनुनव जाहके करो विचार, कददेखे हैवाकी तनमे सार ॥ प्यारे० ॥ ४ ॥ जाय अनुनव जइ समजाये कंत, घर आये आनंदघन नये वसंत ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद उंगणशाठमुं ॥ राग कल्याण ॥

॥ मोकूं कोक केसी हूंतको, मेरो काम इक प्रान जीवनसूं ॥ और नावे सो बको ॥ मे० ॥ १ ॥ में आयो प्रभु सरन तुमारी, लागत नांही धको ॥ भु ज उगाय कहुं औरनसुं, करहुं जकरहीसको ॥मे०॥ ॥ २ ॥ अपराधि चित्त गान जगत जन, कोरिक नां त चको ॥ आनंदघन प्रभु निहचे मानो, इह जन राव रोयको ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद शारमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ अब मेरे पति गति देवनिरंजन ॥ अ० ॥ नट कूं कहा कहा सिर पटकूं, कहा करुं जन रंजन ॥ ॥ अ० ॥ १ ॥ खंजन दृगन दृगन लगावुं चाहूं न चितवन अंजन ॥ संजन घट अंतर परमातम, सकल दुरित जय भंजन ॥ अ० ॥ २ ॥ एह कामगवि एह काम घट, एही सुधारस मंजन ॥ आनंदघन प्रभु घटवनके हरि, काम मतंग गज गंजन ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद एकशरमुं ॥ राग जयजयवंती ॥

॥ मेरीसुं तुमतें जुं कहा, दूरीके होनैं सबैरीरी ॥ ॥ मे० ॥ १ ॥ रूठेसे देख मेरी, मनसा दुःख घेरीरी ॥ जाके संग खेलो सोतो, जगतकी चेरीरी ॥ मे० ॥ २ ॥ शिरछेदी आगें धरे, और नहीं तेरीरी ॥ आनंदघन कीसो, जो कहुंहुं अनेरीरी ॥ मे० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद बाशठमुं ॥ राग मारू ॥

॥ पीयाबिन सुधिबुद्धि मूंदी हो, विरह भूयंग निसा समे ॥ मेरी सेजडी खूंदी हो ॥ पी० ॥ १ ॥ भोयण पान कथा मिटी, किसहुं कहुं सूधी हो ॥ आज कीाल घर आंनकी, जीव आस विलूधी हो ॥

॥ पी० ॥ २ ॥ वेदन विरह अथाह है, पाणी नव ने जा हो ॥ कौंन हबीब तबीब है,टारे कर करेजा हो ॥ पी० ॥ ॥ ३ ॥ गाल हथेली लगायके, सुरसिंधू समेली हो ॥ असुअन नीर वहायके, सींचू कर वेली हो ॥ पी० ॥ ४ ॥ श्रावण जाडुं घनघटा, विच बीज जबूका हो ॥ सरिता सरवर सब जरे, मेरा घट सर सब सूका हो ॥ पी० ॥ ५ ॥ अनुजव बात बनायके, कहे जैसी जावे हो ॥ समता टुक धीरज धरे, आनंदघन आवे हो ॥ पी० ॥ ६ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद त्रेशठमुं ॥ रागमारू ॥

॥ व्रजनाथसे सुनाथ विण, हाथो हाथ विकायो ॥ विचको कोउ जनकृपाल, सरन नजर नायो ॥ व्र० ॥ ॥ १ ॥ जननी कहुं जनक कहुं, सुत सुता कहायो ॥ जाइ कहुं जगनी कहुं, मित्र शत्रु जायो ॥ व्र० ॥ २ ॥ रमणी कहुं रमण कहुं, राउ रज उतायो ॥ सेवकपति इंद चंद, कीट जृंग गायो ॥ व्र० ॥ ३ ॥ कामी कहुंक नामी कहुं, रोग जोग मायो ॥ निसंपतिधर देह गेह, धरि विविध विध धरायो ॥ व्र०॥ ४ ॥ विधि निषेध नाटक धरी, जेख आठ छायो ॥ जाषा षट् वेद चार, सांग शुद्ध पढायो ॥ व्र० ॥ ५ ॥ तुमसें गजरो

ज पाय, गर्दन्न चढी धायो ॥ पायस सुग्रहको विसा
री, नीख नाज खायो ॥ व्र० ॥ ६ ॥ नीजामुंह टुक
न चाय, कहोजुं दास आयो ॥ रोमरोम पुलकितहूं,
परम लाज पायो ॥ व्र०॥ ७ ॥ एरि पतितके उधारन
तुम, कहिमो पीवत मामी ॥ मोसुं तुम कब उधा
रो, कूर कुटिल कामी ॥ व्र० ॥ ८ ॥ और पतित कें
इ उधा रे, करणी विनु करता ॥ एक काही नाउं ले
उं, जूठे बिरुद धरता ॥ व्र० ॥ ए ॥ करनी करी पा
र नए, बहोत निगम साखी ॥ शोना दइ तुमकूं ना
थ, अपनी पत राखी ॥ व्र० ॥ १० ॥ निपट अज्ञानी
पाप कारी, दासहे अपराधी ॥ जानुंजो सुधार हो, अ
ब नाथ लाज साधी ॥ व्र० ॥ ११ ॥ औरको उपाशक
हूं, कैसें कोइ उधारुं ॥ डुविधा यह राखो मत, यावरी
विचारुं ॥ व्र० ॥ १२ ॥ गईसो तो गई नाथ, फेर नहीं
कीजें ॥ द्वारें रह्यो ढीव दास, अपनो करी लीजें ॥
॥व्र०॥१३॥ दासकों सुधारी लेहु, बहूत कहा कहियें॥
आनंदघन परम रीत, नाउंकी निवहियें ॥ व्र० ॥१४॥

॥ पद चोशठमुं ॥ राग मारू ॥

॥ अब जागो परमगुरु परमदेव प्या रे, मेटहु हम
तुम बिच नेद ॥ अ० ॥ १ ॥ आली लाज निगोरी

गमारी जात, मुहि आंन मनावत विविध जात ॥ अ० ॥ २ ॥ अली पर निर्मूली कुलटी कांन, मुहि तुहि मिलन बिच देत हांन ॥ अ० ॥ ३ ॥ पति म तवारे और रंग, रमे ममता गणिकाके प्रसंग ॥ अ० ॥ ४ ॥ जब जड तो जड वास अंत, चित्तफूले आ नंदघन जए वसंत ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांशठमुं ॥

॥ साखी ॥ रास ससी तारा कला, जोसी जोइने जोस ॥ रमता सुमता कब मिले ॥ पाठांतर आत मिता किम मिले ॥ लागे विरहा सोस ॥ १ ॥

॥ गोडी रागणीमां ॥

॥ पीया बिन कौंन मिटावे रे, विरह व्यथा असरा ल ॥ पी० ॥ १ ॥ निंद नीमाणी आंख तेरे, नाठी मुज दुःख देख ॥ दीपक शिर झोले खरो प्यारे, तन थिर धरे न निमेष ॥ पी० ॥ २ ॥ ससि सरिण तारा जगी रे, विनगी दामिनी तेग ॥ रयणी दयणमते दगो प्यारे. मयण सयण विनुवेग ॥ पी० ॥ ३ ॥ तनपिंज र जूरें पर्यो रे, ऊडी न सके जीव हंस ॥ विरहानल जाला जली प्यारे, पंख मूल निर वंस ॥ पी० ॥ ४ ॥ ऊसासासे वढाऊकों रे, वादवदे निसि रांम ॥ न मने

कसासा मनी प्या रे.हटके न रयणी मांझ॥पी०॥५॥
इह विधिछे जे घरधणीरे, उससुं रहे उदास॥ हरविध
आइ पूरी करे प्यारे.आनंद घन प्रभु आस॥पी०॥६॥

॥ पद बारमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ साधुभाइ अपना रूप जब देखा ॥ साधु० ॥
करता कौन कौन फुनी करनी. कौन मागेगो लेखा ॥
॥ साधु० ॥ १ ॥ साधु संगति अरु गुरुकी कृपा तें,
मिटगइ कुलकी रेखा ॥ आनंदघन प्रभु परचो पायो,
उतर गयो दिल भेखा ॥ साधु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सडसठमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ राम कहो रहेमान कहो कोउ, कान कहो म
हादेवरी ॥ पारस नाथ कहो कोउ ब्रह्मा, सकल ब्रह्म
स्वय मेवरी ॥ राम० ॥ १ ॥ भाजन भेद कहावत
नाना, एक मृतिका रूपरी ॥ तैसे खंड कल्पना रोपि
त, आप अखंड सरूपरी ॥ राम० ॥ २ ॥ निजपद
रमे राम सो कहियें, रहिम करे रहेमानरी ॥ करषे क
रम कांन सो कहियें, माहादेव निरवाणरी ॥ राम०
॥ ३ ॥ परसे रूप पारस सो कहियें, ब्रह्म चिन्हें सो
ब्रह्मरी ॥ इहविध साधो आप आनंदघन, चेतनमय
निःकर्मरी ॥ राम० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अडशठमुं ॥ राग असाउरी ॥

॥ साधु संगति बिनु कैसें पैयें, परम महारस धाम री ॥ ए आंकणी ॥ कोटी उपाय करेजो बौरो, अनुनव कथा विसरामरी ॥ साधु० ॥ १ ॥ सीतल सफल संत सुर पादप, सेवे सदा सुबाइरी ॥ वंबितफले टले अनवंबित. नव संताप बूजाइरी ॥ साधु० ॥ ॥ २ ॥ चतुरविरंची विरंजन चाहे, चरणकमल मकरंदरी ॥ को हरि नरम विहार दिखावे. शुद्ध निरंजन चंदरी ॥ साधु० ॥ ३ ॥ देव असुर इंद्र पद चाहुं न, राज न काज समाजरी ॥ संगति साधु निरंतर पावुं, आनंदघन महाराजरी ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद उगणोरतेमुं ॥ राग अलहियो वेलाउल ॥

॥ प्रीतकी रीत नही हो प्रीतम, प्रीत०॥ मैंतो अपनो सरब श्रृंगारो, प्यारेकी न लई हो ॥ प्री० ॥ ॥ १ ॥ मैं वस पीयके पीय संग औरंके, यागति किन सीखई ॥ उपगारी जन जाय मनावो, जो कछु नई सो नई हो ॥ प्री० ॥ २ ॥ विरहानल जाला अतिहि कठिन है, मोपें सही न गई॥ आनंदघन यूं सघन धारा, तबही दे पठई हो ॥ प्री० ॥ ३ ॥इति पदं॥

॥ पद त्रीसमुं ॥

साखी॥ आतम अनुभव रस कथा,प्याला पीया नजाय ॥ मतवाला तो ढहि परे, निमता परे पचाय ॥१॥

॥ राग वसंत धमाल ॥

॥ छबिले लालन नरम कहे, आली गरम करत कहा बात ॥टेक॥ माके आगें मामूकी कोई, वरनन करय गिवार ॥ अजहू कपटके कोथरी हो, कहा करे सरधा नार ॥ छ० ॥ १ ॥ चउगति महेल न छारिही हो, कैसे आत भरतार ॥ खानो न पीनो इन बातमें हो, हसत भांनन कहा हाड ॥ छ० ॥ २ ॥ ममता खाट परे रमे हो, और निंदे दिन रात ॥ लैनो न देनो इन कथा हो, भोरही आवत जात ॥ छ० ॥ ३ ॥ कहे सरधा सुनि सामिनी हो, एतो न कीजें खेद ॥ हेरे हेरे प्रभु आवही हो, वदे आनंदघन भेद॥छ०॥४॥

॥ पद एकत्रीसमुं ॥ राग मारू ॥

॥ अनंत अरूपी अविगत सासतो हो, वासतो वस्तु विचार ॥ सहज विलासी हासी नवी करे हो, अविनासी अविकार ॥ अनं० ॥ १ ॥ ज्ञानावरणी पंच प्रकारनो हो, दरशननां नव भेद ॥ वेदनी मोहनी दोय दोय जाणीये हो, आयुखुं चार विछेद ॥ अ

नं०॥ २ ॥ शुभ अशुभ दोय नाम वखाणीयें हो,नीच ऊंच दोय गोत ॥ विघ्न पंचक निवारी आपथी हो, पंचम गित पति होत ॥ अनं० ॥ ३ ॥ युगपद्भावि गुण भगवंतना हो, एकत्रीश मन आण ॥ अवर अनंता परमागमथकी हो, अविरोधी गुण जाण ॥ अनं० ॥ ४ ॥ सुंदर सरूपी सुभग शिरोमणी हो, सुण मुज आतमराम ॥ तन्मय तल्लय तसु भक्ते करी हो, आनंदघन पद गाम ॥ अनं० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बहोतेरमुं ॥ राग केदारो ॥

॥ मेरे माजी मजीठी सुण एक वात, मीठडे लाल न विन न रहुं रलीयात ॥ मे० ॥१॥ रंगीत चूनडी लडी चीडा, काथा सोपारी अरु पानका बीडा ॥ मांग सिंदूर सदल करे पीडा, तनक ठमांकोरे विरहा कीडा ॥ मे० ॥ २ ॥ जहां तहां ढुंढुं ढोल न मित्ता, पण भोगी नरविण सब युग रीता ॥ रयणी विहाणी दाहाडा धीता, अजहू न आवे मोहि छेहा दीता ॥ ॥ मे० ॥ ३ ॥ तनरंग फूंद भरमली खाट, चुन चुन कलीयां विछुं घाट ॥ रंग रंगीली फूली पहेरुंगी नाट, आवे आनंदघन रहे घर घाट ॥मे०॥४॥ इति पदं ॥

॥ पद तहोतेरमुं ॥ राग केदारो ॥

॥ जोले जोगा ढूंरूढूं तुम जला हासा, सलूणे साजन विण कैसा घर वासा ॥ जोले० ॥ १ ॥-सेज सुंहाली चांदणी रात, फूलडी वाडी ऊर सीतल वात॥ सघली सहेली करे सुख साता, मेरा तन ताता मूआ विरहा माता ॥ जो० ॥ २ ॥ फिर फिर जोउं धरणी आगासा, तेरा छिपणा प्यारे लोक तमासा ॥ न वले तनतें लोही मांसा, मांइडानीवे घरणी छोडी निरासा ॥ जो० ॥ ३ ॥ विरह कुनावसों मुज कीया, खबर न पावो तो धिग मेरा जीया ॥ दही वायदो जोवतावे मेरा कोइ पीया, आवे आनंदघन करुं घर दीया॥जो०॥४॥

॥ पद चमोतेरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ याकुबुद्धि कुमरी कौन जात, जाहां रीजे चेतन ग्यान गात ॥ या० ॥ १ ॥ कुछित साख विशेष पाय, परम सुधारस वारि जाय ॥ या० ॥ २ ॥ जीया गुन जानो और नांही, गले पडेंगी पलक मांहिं ॥या०॥ ॥ ३ ॥ रेखा छेदेवाही तांम, पढीयें मीठी सुगुण धाम ॥ या० ॥ ४ ॥ ते आगें अधिके रीताही, आनंदघन अधिकेरी चाही ॥ या०॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पदपञ्चोतेरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ लालन बिन मेरो कुन हवाल, समजे न धटकी नेतुर लाल ॥ ला० ॥१॥ वीर विवेकजुं मांजि मांहि, कहा पेट दई आगें छिपाई ॥ ला० ॥ २ ॥ तुम नावे जो सो कीजें वीर, सो२ आंन मिलावो लालन धीर ॥ ॥ ला० ॥ ३ ॥ भमरें करे न जात आय, मन चंचलता मिटे समाध ॥ ला० ॥ ४ ॥ जाय विवेक विचार कीन, आनंदघन कीने अधीन ॥ ला० ॥ ५ ॥ इति

॥ पद बहोतेरमुं ॥ राग वसंत ॥

॥ प्यारे प्रान जीवन ए साच जान, उत बरकत नांही न तिल समान ॥ प्यारे० ॥ १ ॥ उनसें न मांगु दिन नांहि एक, इत पकरि लाल छरि करि विवेक॥ ॥ प्यारे० ॥ २ ॥ उत सठता माया मान ढूंब, इत रुजुता मृडुता जांनो कुटुंब ॥प्यारे०॥ ३ ॥ उत आसा तृष्णा लोन कोह, इत शांत दांत संतोष सोह ॥ प्यारे० ॥ ४ ॥ उत कला कलंकी पाप व्याप, इत खेले आनंदघन नूप आप ॥ प्यारे० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सीतोतेरमुं ॥ राग रामगिरि ॥

॥ हमारी लयलागी प्रन्नु नाम ॥ ह० ॥ अंब खास अरु गोसलखाने, दर अदालत नहीं काम ॥

॥ ह० ॥ १ ॥ पंच पचीश पच्चास हजारी, लाख कि
रोरी दाम ॥ खाय खरचे दीये विनु जात है, आनन
करकर श्याम ॥ह०॥२॥ इनके उनके शिवके न जीउके,
उरज रहे विनु गाम ॥ संत सयाने कोय बतावे, आ
नंदघन गुन धाम ॥ ह० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अह्योतेरमुं ॥ राग रामग्री ॥

॥ जगत गुरु मेरा में जगतका चेरा, मिट गया वा
द विवादका घेरा ॥ ज० ॥ १ ॥ गुरुके घरमें नवनि
धि सारा, चेलेके घरमें निपट अंधारा ॥ ज० ॥ गुरुके
घर सब जरित जराया, चेलेकी मढीयांमें छपर छाया॥
॥ज०॥२॥ गुरु मोही मारें शब्दकी लागी, चेलेकी म
ति अपराधनि कागी ॥ ज० ॥ गुरुके घरका मरम
न पाया, अकथ कहांनी आनंदघन बावा ॥ज०॥३॥

॥ पद उगण्याएँसीमुं ॥ राग जय जयवंती ॥

॥ मेरीसुं मेरीसूं मेरीसूं मेरीसूं, मेरी तुमतें छुक
हा दूरी, कहोने सवेरीरी ॥ मे० ॥ १ ॥ रूठेसे देखी मेरी
मनसा, दुःख घेरीरी ॥ जाके संग खेलो सो तो, जग
तकी चेरीरी ॥ मे० ॥ २ ॥ सिरछेदी आगें धरे, और
नहीं तेरीरी ॥ आनंदघनकी सो जो, कहुं हुं अ
नेरीरी ॥ मे० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद अेंसीमुं ॥ राग जय जयवंती ॥

॥ अैसी कैसी घरवसी, जिनस अनेसीरी ॥ याही घर रहिसे जग वाहा आपद हे इसीरी ॥ अै० ॥ १ ॥ परम सरम देसी, घरमेउ पेसीरी ॥ याहीते मोहनी मैसी, जगत सगेसीरी ॥ अै० ॥ २ ॥ कोरीसीगरज नेसी, गरज न चखेसीरी ॥ आनंदघन सुनो सीवंदी, अरज कहेसीरी ॥ अै० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एक्यासीमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ चेतन शुद्धातमकूं ध्यावो, परपरचे धांमधूम सदाई, निज परचे सुख पावो ॥ चे० ॥ १ ॥ निजघरमें प्रभुता हे तेरी, परसंग नीच कहावो, प्रत्यक्ष रीत लखी तुम अैसी, गहीये आप सुहावो ॥ चे० ॥ २ ॥ जावत् तृष्णा मोह हे तुमकों, तावत् मिथ्या जावो॥ स्वसंवेद ग्यान लही करिवो, छंमो भ्रमक विभावो ॥ ॥ चे० ॥ ३ ॥ सुमता चेतन पतिकूं इणविध, कहे निज घरमें आवो ॥ आतम उच्च सुधारस पीये, सुख आनंद पद पावो ॥ चे० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ब्यासीमुं ॥ राग सारंग ॥

॥ चेतन अैसा ग्यान विचारो, सोहं सोहं सोहं, सोहं सोहं अणुनबीया सार ॥चे०॥१॥ निश्चय स्वल

रूण अवलंबी,प्रगन्या छैनी निहारो ॥ इह छैनी मध्य पाती डुविधा, करे जड चेतन फारो ॥ चे० ॥ २ ॥ तस छैनी कर ग्रहीये जोधन. सो तुम सोहं धारो. सो हं जानि दटो तुम मोहं. व्है समको वारो ॥ चे० ॥ ॥ ३ ॥कुलटा कुटिल कुबुधि कुमता, छंडोव्है निज चारो ॥ सुख आनंद पदे तुम चेसी, स्वपरकूं निस्ता रो ॥ चे० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ब्यासीमुं ॥ राग सूरति टोडी ॥

॥ प्रजु तो सम अवर नकोइ खलकमें, हरिहर ब्र ह्मा विगूते सोतो, मदन जीत्यो तें पलकमे ॥ प्र० ॥ ॥ १ ॥ ज्यों जल जगमें अगन बूजावत, वडवानल सो पीये पलकमे, आनंदघन प्रजु वामारे नंदन, तैरी हाम न होत हलकमे ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोरासीमुं ॥ राग मारुणी ॥

॥ निस्पृह देस शोहामणुं, निरजय नगर उदार हो ॥ वसे अंतरजामी ॥ निरमल मन मंत्रीवडो, रा जा वस्तु विचार हो ॥ वसे० ॥ १ ॥ केवल कमला गार हो, सुण सुण शिवगामी ॥ केवलकमला नाथ हो, सुण सुण निहकामी ॥ केवल कमला वास हो, सुण सुण शुनगामी ॥ आतमातूं चूकीसमां, साहेबातूं

चूकीसमां, राजिंदातूं चूकीसमां, अवसर लहीजी ॥ ए आंकणी ॥ दृढ संतोषकामामोदसा. साधु संगत दृढ पोल हो ॥ वसे० ॥ पोलियो विवेक सुजागतो, आगम पायक तोल हो ॥ वसे० ॥ २ ॥ दृढ विसवास विता गरो, सुविनोदी व्यवहार हो ॥ वसे० ॥ मित्र वैराग विहडे नही,क्रीडा सुरति अपार हो ॥ वसे० ॥ ३ ॥ भावना बार नदी वहे, समता नीर गंभीर हो ॥ वसे०॥ ध्यान चहिवचो भर्यो रहे,समपन भाव समीर हो ॥ वसे० ॥ ४ ॥ उचालो नगरी नहीं, दुष्टदुकाल न योग हो ॥ वसे०॥ ईति अनीति व्यापे नही. आनंदघन पद भोग हो ॥ वसे० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पंच्चासीमुं ॥ इमन रागणी ॥

॥ लागी लगन हमारी, जिन राज सुजस सुन्यो में ॥ला०॥टेक॥ काहूके कहे कबहूं नहि छूटे, लोक लाज सब डारी ॥ जैसे अमलि अमल करत समे, लाग रही ज्युं खुमारी ॥ जि० ॥ १ ॥ जैसे योगी योग ध्यानमें, सुरत टरत नही टारी ॥ तैसे आनंद घन अनुहारी, प्रभुके हू बलिहारी ॥ जि० ॥ २ ॥

॥ पद छ्यासीमुं ॥ राग काफी ॥

॥ वारीहुं बोलडे मीठडे, तुजविन मुज नहि सरे

रे सूरिजन ॥ जागत और अनीठडे ॥ वा० ॥ १ ॥
मैरे मनकूं चक न परत है, बिनु तेरे मुख दीठडे ॥
प्रेम पीयाला पीवत पीवत, लालन सबदिन नीठडे ॥
॥वा०॥ २ ॥ पूछूं कौन कहालूं ढूंढूं, किसकूं नेजुं ची
ठडे ॥ आनंदघन प्रभु सेजडी पावंतो, जागे आन
वसीठडे ॥ वा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्यासीमुं ॥

॥ साखी ॥ कुबुद्धि कुमरी कुटिलगत, सुबुद्धि राधिका
नारि ॥ चोपर खेले राधिका, जीते कुबजा हारि ॥१॥

॥ राग धमाल ॥

॥ सलुणे साहेब आवेगे मेरे, आलीरी वीरविवेक
कहो साच ॥ स० ॥ मोसुं साच कहो मेरीसुं, सुख
पायोके नाहिं ॥ कहांनी कहा कहुं कहांकी, हिंमोरे च
तुरगति माहिं ॥ स० ॥ १ ॥ नली नई इत आव
ही हो, पंचम गतिकी प्रीत ॥ सिद्ध सिद्धंत रस पा
ककी हो, देखे अपूरव रीत ॥स०॥२॥ वीर कहे एती
कहुं हो, आए आए तुम पास ॥ कहे समता परिवारसुं
हो, हमहे अनुनव दास ॥स०॥ ३ ॥ सरधा सुमता
चेतना हो, चेतन अनुनव आहिं ॥ सगति फोरवे
निज रूपकी हो, लीने आनंदघन माहिं ॥ स० ॥४॥

॥ पद अठ्यासीमुं ॥

॥ साखी ॥ आतम अनुभव रसकथा, प्याला पीया न जाय ॥ मतवाला तो ढहीपरे, निमता परे पचाय ॥ १ ॥

॥ राग धमाल ॥

॥ विवेकी वीरा सह्यो न परे, वरजो क्युं न आपके मित्त ॥ वि० ॥टेक॥ कहा निगोडी मोहनीहो, मोहत लाल गमार ॥ वाके पर मिथ्या सुताहो, रीज पडे कहा यार ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रोध मान बेटा भये हो, देत च पेटा लोक ॥ लोभ जमाई माया सुता हो, एह ब ढ्यो पर मोक ॥ वि० ॥ २ ॥ गई तिथिकूं कहा बं भणा हो, पूछे सुमता भाव ॥ वरको सुत तेरे मर्ते हो, कहालौं करत बढाव ॥ वि० ॥ ३ ॥ तब समता उद्यम कीयो हो, मेट्यो पूरव साज ॥ प्रीत परमसुं जोरिके हो, दीनो आनंदघन राज ॥ वि० ॥ ४ ॥इति॥

॥ पद नेव्यासीमुं ॥ राग धमाल ॥

॥ पूछीयें आली खबर नहीं, आये विवेक वधाय ॥पू०॥आंकणी॥ महानंद सुखकी वरनीका, तुम आवत हम गात ॥ प्रान जीवन आधारकी हो, खेमकुशल कहो बात ॥ पू० ॥ १ ॥ अचल अबाधित देवकूं हो, खेम शरीर लखंत ॥ व्यवहारि घटवध कथा हो, नि

हचें सरम अनंत ॥ पू० ॥ २ ॥ बंधमोख निहचें न
ही हो, विवहारे लख दोय ॥ कुशल खेम अनादी
ही हो, नित्य अबाधित होय ॥ पू० ॥ ३ ॥ सुन वि
वेक मुखते नही हो, बानी अमृत समान ॥ सरधा
समता दो मिली हो, ल्याई आनंदघन तान ॥पू०॥४

॥ पद नेवुंमुं राग धन्याश्री ॥

॥ चेतन सकल वियापक होइ ॥ सकल० ॥ चे० ॥
सत असत गुन परजय परनति, भाव सुभाव गति दो
इ ॥ चे० ॥ १ ॥ स्व पर रूप वस्तुकी सत्ता, सीजे ए
क न होइ ॥ सत्ता एक अखंम अबाधित, यह सिद्धां
त पख होइ ॥ चे० ॥ २ ॥ अनवय व्यतिरेक हेतु को,
समजी रूप भ्रम खोई ॥ आरोपित सब धर्म और
है, आनंदघन तत सोइ ॥ चे० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद एकाणुमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ साखी ॥ अण जोवंता लाख, जोवेतो एकें न
हीं ॥ लाधी जोवन साख, वाहाला विण एळें गइ॥१॥

॥ महोटी वहुयें मनगमतुं कीधुं ॥म०॥मो०॥ ए
आंकणी ॥ पेटमें पेशी मस्तक रेहेंसी, वेरी साही
स्वामीजीने दीधुं ॥ मोटी० ॥ १ ॥ खोळे बेसी मीठुं
बोले, कांइ अनुभव अमृत जल पीधुं ॥ ग्रानी ग्रानी

ठरकडा करती, ठरती आंखें मनडुं वींध्युं ॥मोटी०॥ ॥ २ ॥ लोकालोक प्रकाशक छैयुं, जणतां कारज सीधुं ॥ अंगो अंगें रंगनर रमतां, आनंदघन पद लीधुं ॥ मोटी० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बाणुमुं ॥ रागणी मारु ॥

॥ वारो रे कोइ परघर रमवानो ढाल, न्हानी वहुने परघर रमवानो ढाल ॥ ए आंकणी ॥ परघर रमतां थइ जूठा बोली, देशे धणीजीने आल ॥ वारो०॥ ॥ १ ॥ अलवे चाला करती हींमे, लोकडां कहेछे छीनाल ॥ उलंनडा जण जणना लावे, हैयडे उपासे शाल ॥ वारो० ॥ २ ॥ बाइरे पडोसण जुठनी लगारेक, फोकट खाशें गाल ॥ आनंदघन प्रजु रंगें रमतां, गोरे गाल ऊबूके झाल ॥ वारो० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्र्याणुमुं ॥ राग कनडो ॥

॥ दरिशन प्रानजीवन मोहे दीजें ॥ बिन दरिशन मोहि कल न परतु है, तलफ तलफ तन छीजें ॥दरि० ॥ १ ॥कहा कहुं कछु कहत न आवत, बिन सेजा क्युंजीजें ॥ सोंहुं खाइ सखी काहु मनावो, आपही आप पतीजें ॥ दरि० ॥ २ ॥ देउर देरानी सासु जें

गानी, युंहीं सब मिल खीजें ॥ आनंदघन बिन प्रान नरहे बिन, कोडी जतनजो कीजे ॥ दरि० ॥ ३ ॥

॥ पद चोराणुमुं ॥ राग शोरठी ॥ मुने म्हारा माधवीयाने मलवानो कोड ॥ ए देसी ॥

॥ मुने म्हारा नाह्लीयाने मलवानो कोड ॥ हुं राखुं माडी कोइ मुने बीजो वलगो जोड ॥ मुने० ॥ ॥ १ ॥ मोह्नीया नाह्लीया पांखे माहारे, जग स वि ऊजड जोड ॥ मीठा बोला मन गमता नाह्जी वि ण, तन मन थाये चोड ॥ मुने० ॥ २ ॥ कांइ ढोली यो खाट पछेडी तलाई, नावे न रेसम सोड ॥ अवर सवे म्हारे जलारे जलेरा, म्हारे आनंदघन सिर मोड ॥ मुने० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पंचाणुमुं ॥ राग शोरठी ॥

॥ निराधारा कांइ मूकी मूने श्याम, निरधारा केम मूकी ॥ कोइ नही हूं कुणसुं बोलुं, सहु आलंबन टूकी॥ ॥ श्या० ॥ १ ॥ प्राणनाथ तुमे दूर पधाख्या, मूकी नेह निरासी ॥ जणजणनां नित प्रत्यें गुणगातां, जनमा रो किम जासी ॥ श्या० ॥ २॥ जेह्नो पक्ष लहीने बो लुं, ते मनमां सुख आणे ॥ जेह्नो पक्ष मूकीने बोलुं, ते जनम लगें चित्त ताणे ॥ श्या० ॥ ३ ॥ वात तमारी

मनमां आवे, कोण आगल जई बोलुं ॥ ललित ख लित खल जो ते देखुं, आम माल धन खोलुं ॥श्या०॥ ॥ ४ ॥ घट घटें हो अंतर जामी, मुजमां कां नवि देखुं ॥ जे देखुं ते नजर न आवे, गुणकर वस्तु विशेखुं॥ ॥श्या०॥ ५ ॥ अवधें केहनी वाटडी जोउं, विण अवधें अती जूरूं ॥ आनंदघन प्रभु वेग पधारो, जिम मन आश्या पूरूं ॥ शा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद छन्नुंमुं ॥ राग अलश्यो वेलाउल ॥

॥ ऐसें जिनचरने चित्त ल्याउंरे मना ॥ ऐसें० ॥ ऐसें अरिहंतके गुन गाउंरे मना ॥ऐसेंजिन०॥ ए आंकणी॥ उदर नरनके कारणे रे, गौआं वनमें जाय ॥ चारचरे चिहुं दिस फिरे वाकी,सुरति वछरुआ मांहे रे॥ ऐसेंजिन० ॥१ ॥ सात पांच सहेलीयां रे, हिलमिल पाणी जाय ॥ ताली दीये खडखड हसे रे,वाकी सुरति गगरुआ मांहे रे ॥ऐसेंजिन०॥२॥ नटुआ नाचे चोकमें रे, लाखकरे लख सोर ॥ वांसग्रही वरतें चढे, वाको चित्त नचले कहुं गेर रे ॥ ऐसेंजिन० ॥ ३ ॥ जूआरी मनमें जूआ रे, कामीके मन काम ॥ आनंदघन प्रभु युं कहे, इम ल्यो नगवंत नाम रे ॥ ऐ० ॥४॥

॥ पद सत्ताणुमुं ॥ रागणी धन्याश्री ॥

॥ अरी मेरो नाहेरी अतिवारो ॥ मैं ले जोवन कित जाउं, कुमति पिता बजना अपराधि, नउवा है वज मारो ॥ अरी० ॥ १ ॥ जलो जानीके सगाई कीनी, कौन पाप उपजारो ॥ काहा कहियें इन घरके कुटुंब तें, जिने मैरो काम बिगारो ॥ अ० ॥ २ ॥ इति पदं॥

॥ पद अठाणुमुं ॥ राग कल्याण ॥

॥ या पुजलका क्या विसवासा ॥ या० ॥ सुपने कासा रे ॥ ए आंकणी ॥ चिमतकार विजली दे जैसा, पानी बिच पतासा ॥ या देहीका गर्व न करनां, जंगल होयगा वासा ॥ या० ॥ १ ॥ जूठे तन धन जूठे जोबन, जूठे है घर वासा ॥ आनंदघन कहे सबही जूठे, साचा शिवपुर वासा ॥ या० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद नवाणुमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा, इन पदका करेरे निवेडा ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ तरुवर एक मूल बिन ठाया, बिन फूलें फल लागा ॥ शाखा पत्र नही कबु उनकूं, अमृत गगने लागा ॥ अ० ॥ ॥ १ ॥ तरुवर एक पंठी दोउ बेठे, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने जुग चुण चुण खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ०॥

॥ २ ॥ गगन मंमलमें अधबिच कूवा, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगुरा होये सो नर नर पीवे, नगुरा जावे प्यासा ॥ अ० ॥ ३ ॥ गगन मंमलमें गउ बिहानी, धरती दूध जमाया ॥ माखनथा सो विरला पाया, छासे जगत नरमाया ॥ अ० ॥ ४ ॥ थड बिनु पत्र पत्र बिनु तुंबा, बिन जीन्या गुण गाया ॥ गावन वालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही बताया ॥ अ० ॥ ५ ॥ आतम अनुनव बिन नहीं जाने, अंतर ज्योत जगावे ॥ घट अंतर परखे सोही मूरत, आनंदघन पद पावे ॥अ०॥

॥ पद एकशोमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ अवधू ऐसो ज्ञान बिचारी, वामें कोण पुरुष कोण नारी ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ बम्मनके घर न्हाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ पढ नई रे तुरकडी तो, आपही आप अकेली ॥ अवधू० ॥ ॥ १ ॥ ससरो हमारो बालो नोलो, सासू बाल कुंवारी॥ पीयुजी हमारो प्होढे पारणीए तो,में हुं फूलावन हारी ॥ अवधू० ॥ २ ॥ नहीं हुं परणी नहीं हुं कुंवारी, पुत्र जणावन हारी ॥ काली दाढी को में कोइ नहीं छोड्यो तो,हजुए हुं बाल कुंवारी ॥अवधू०॥३॥ अढी द्वीपमें खाट खटूली, गगन उशीकुं तलाई ॥ धर

तीको ठेडो आनकी पीठोडीतो, तोये न सोड नराई ॥अवधू०॥४॥ गगन मंमलमें गाय वीआणी, वसुधा दूध जमाई ॥ सजरे सुनो नाइ वलोणो वलोवे तो, तत्व अमृत कोइ पाई ॥ अवधू० ॥ ५ ॥ नहीं जाउं सासरीयें ने नहीं जाउं पीयरीयें, पीयुंजीकी से ज बीठाई ॥ आनंदघन कहे सुनो नाइ साधु तो,ज्यो तषें ज्योत मिलाई ॥ अवधू० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकशो एकमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ बेहेर बेहेर नही आवे अवसर,बेहेर बेहेर नही आवे ॥ ज्युं जाणे त्युं करले नलाई, जनम जनम सुख पावे ॥ अवसर० ॥१॥ तन धन जोबन सबही जूठो, प्राण पलकमें जावे ॥ अवसर० ॥ २ ॥ तन बूटे धन कौन कामको, कायकूं कृपण कहावे ॥ अवसर० ॥ ॥ ३ ॥ जाके दिलमें साच बसत हे, ताकूं जूठ न नावे ॥ अवसर० ॥४॥ आनंदघन प्रजु चलत पंथ में, समरी समरी गुण गावे ॥ अवसर० ॥५॥ इति ॥

॥ पद एकशो बेमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ मनुप्यारा मनुप्यारा, रिखन देव मनुप्यारा ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम नरेसर, प्रथम यति व्रतधारा ॥ रिखन० ॥ १ ॥ नाजिराया

मरुदेवीको नंदन, जुगला धर्मनिवारा ॥ रिखन० ॥ ॥ २ ॥ केवल लइ प्रज्जु मुगतें पोहोता, आवा गमन निवारा ॥ रिखन० ॥ ३ ॥ आनंदघन प्रज्जु इतनी विनति, आलव पार उतारा ॥ रिखन० ॥ ४ ॥ इति

॥ पद एकशो त्रणमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ ए जिनके पाए लाग रे ॥ तुने कहीयें केतो, ए जिनके० ॥ ए आंकणी ॥ आगेइ गम फिरे मदमातो, मोहन दरीआहुं जाग रे ॥ तुने० ॥ १ ॥ प्रज्जुजी प्रीतम विन नहीं कोइ प्रीतम, प्रज्जुजीनी पूजा घणी माग रे ॥ तुने० ॥ नवका फेरा वारी करो जिन चंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तुने० ॥ २ ॥

॥ पद एकशोचारमुं ॥ राग ॥

॥ हांरे प्रज्जु नजले मेरा दील राजी ॥ ए आंकणी॥ आठ पोहोरकी चोशठ घडीयां, दो घडीयां जिन साजी रे ॥ हांरे० ॥ १ ॥ दान पुण्य कबु धर्म करले, मोह मायाकूं त्याजी रे ॥ हांरे० ॥ आनंदघन कहे समज समज ले,आखर खोवेगा बाजी रे॥हांरे०॥२॥

॥ पद एकशो पांचमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ हवली आंख्यां टेक न मेटे, फिर फरि देखण जाउं ॥ वयल ववीली प्रीय ववि, निरखित तृपति न

होई ॥ हठकरि टुक हटकूं उनी, देतन गोरी रोई ॥ ॥ ह० ॥ १ ॥ मारग ज्योंट मांहेके रही, पीय सबोके द्वार ॥ लाज डांग मनमें नहीं, कांने पछेरा डार ॥ ॥ ह० ॥ २ ॥ अट तनक नही काहूका, हटक न इक तिल कोर ॥ हाथी आप मते अरे, पावे न मावत जोर ॥ ह० ॥ ३ ॥ सुन अनुनव प्रीतम बिना, प्राणजात इह ठाह ॥ है जन आतुर चातुरी, दूर आनंदघन नाह ॥ ह० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकशो ठमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ तज मन हरख मुखनको संग ॥ त० ॥ जाके संग कुबुधि उपजत है, पडत नजनमें नंग ॥ तज० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ कहा नयो पयपान पीलावत, विष न तजे नूयंग ॥ त० ॥ खरकूं कहा अरगजा लेपन, मरकट नूषण अंग ॥ त० ॥ १ ॥ कौआकूं का कपूर चूंगावत, स्वान नाहावत गंग ॥ ज्युं पाषाण बाण नहीं नेदत, रातो नयो निषंग ॥ आनंदघन वे हे काली कंबल, चढत न दूजो रंग ॥ त० ॥ २ ॥

॥ इति श्री आनंदघनजी कृत पद संपूरण ॥

॥ श्रीचिदानंदाय नमः ॥

॥ अथ श्री चिदानंदजी अपर नाम ॥
॥ कपूरचंदजी कृत बहोतेरीना पद ॥
॥ प्रारंभः ॥



॥ तत्र पद पहेलुं ॥ राग मारु ॥

॥ पिया परघर मत जावो रे, कर करुणा महाराज ॥ पिया० ॥ ए आंकणी ॥ कुल मरजादा लोपके रे, जे जन परघर जाइ ॥ तिणकुं उनय लोक सुण प्या रे, रंचक शोना नाह ॥ पिया० ॥ १ ॥ कुमता संगें तुम रहे रे, आगु काल अनाद ॥ तामे मोह दिखा बहु प्या रे, काहा निकाल्यो स्वाद ॥ पिया० ॥ २ ॥ लगत पिया कह्यो माहरो रे, अशुन तुमारे चित्त ॥ पण मोथी न रहाय रे प्या रे, कह्या विना सुण मित्त ॥ ॥पिया०॥३॥ घर अपने वालम कहो रे, कोण वस्तु की खोट ॥ फोगट तद किम लीजीयें रे प्या रे, शीश नरमकी पोट ॥ पिया० ॥ ४ ॥ सुनि समताकी वीनती रे, चिदानंद महाराज ॥ कुमता नेह निवारके प्या रे, लीनो शिवपुर राज ॥ पिया० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद बीजुं ॥ राग मारु ॥

॥ पिया निज महेल पधारो रे, कर करुणा महा राज ॥ ए आंकणी ॥ तुम बिन सुंदर साहेबा रे, मो मन अति दुःख थाय ॥ मनकी व्यथा मनही मन जानत, किम मुखथी कहेवाय ॥ पिया० ॥ १ ॥ बाल जाव अब वीसरी रे, ग्रह्यो उचित मरजाद ॥ आतम सुख अनुजव करो प्या रे, जांगे स्वादी अनाद ॥ पिया० ॥ २ ॥ सेवककी लज्जा सूधी रे, दाखी साहेब हाथ ॥ तोसी करो विमासणा प्या रे,अम घर आवत नाथ ॥ पिया० ॥ ३ ॥ ममचित्त चातुक घन तुमे रे, इस्यो जाव विचार ॥ याचक दानी उजय मल्या प्या रे, शोजे न ढील लगार ॥ पिया०॥ ४ ॥ चिदानंद प्रजु चित्त गमी रे, सुमताकी अरदास ॥ निजघर घरणी जाणके प्या रे, सफल करी मन आस ॥ पिया० ॥५॥

॥ पद त्रीजुं ॥ राग मारु ॥

॥ सुअपा आप विचारो रे, पर पख नेह निवार ॥ ॥ सु० ॥ ए आंकणी ॥ पर परणित पुजल दसा रे, तामें निज अजिमान ॥ धारत जीव एही कह्यो प्या रे, बंधहेतु जगवान ॥ सु० ॥ १ ॥ कनक उपलमें नित्य रहे रे, दूध मांहे फुनी घीव ॥ तिलसंग तेल सुवास कु

सुम संग, देह संग तेम जीव ॥ सु० ॥ २ ॥ रहत हु तासन काष्टमें रे, प्रगटे कारण पाय ॥ लही कारण कार जता प्या रे, सहेजे सिद्धि थाय ॥ सु० ॥ ३ ॥ खीर नीरकी भिन्नता रे, जैसें करत मराल ॥ तैसें भेदज्ञानी लह्यां प्या रे, कटे कर्मको जाल ॥ सु० ॥ ४ ॥ अज कुल वासी केहरी रे, लिख्यो जिम निजरूप ॥ चिदानंद तिम तुमहुं प्या रे, अनुभव सुद्ध स्वरूप ॥सु०॥ ५ ॥

॥ पद चोथुं ॥ राग मारु ॥

॥ बंधनिज आप उदीरत रे, अजा कृपाणी न्याय ॥ बंध० ॥ ए आंकणी ॥ जकड्यां किणें तोहे सां कला रे, पकड्या किणे तुव हाथ ॥ कोण भूप के पहरुये प्या रे, रहत तिहारे साथ ॥ बंध० ॥ ॥ १ ॥ बांदर जिम मदिरा पीये रे, वीछु डंकित गात ॥ भूत लगे कौतुक करे प्या रे, तिम भ्रमको उतपात ॥ बंध० ॥ २ ॥ कीर बंध्या जिम देखीयें रे, नलिणी भ्रम संयोग ॥ इणविध भया जीवकूं प्या रे, बंधन रूपी रोग ॥ बंध० ॥ ३ ॥ भ्रम आरोपित बंध थी रे, परपरिणति संग एम ॥ परवसता दुःख पावते प्या रे, मरकट मूठी जेम ॥ बंध० ॥४॥ मोह दे

शा अलगी करो रे, धरो सु संवर नेख ॥ चिदानंद तव देखीयें प्या रे, ससि स्वनावकी रेख ॥ बंध० ॥ ५ ॥

॥ पद पांचमुं ॥ राग काफी ॥

॥ मतिमत एम विचारो रे, मत मतीयनका नाव ॥ म० ॥ए आंकणी॥ वस्तुगते वस्तु लहो रे, वादविवाद न कोय ॥ सूर तिहां परकास पीयारे,अंधकार नवी होय ॥ म० ॥ १ ॥ रूप रेख तिहां नवी घटे रे, मुड्रा नेख न होय ॥ नेद ज्ञान दृष्टी करी प्या रे, देखो अंतर जोय ॥ म० ॥२॥ तनता मनता बचनता रे, परपरिणति परिवार ॥ तन मन बचनातीत पीया रे, निजसत्ता सुख कार ॥ म० ॥ ३ ॥ अंतर शुद्ध स्वनावमें रें, नही विनाव लवलेश ॥ भ्रम आरोपित लक्षथी प्या रे, हंसा सहत कलेश ॥म० ॥ ४ ॥ अंतरगत निहचें गही रे, कायाथी व्यवहार ॥ चिदानंद तव पामीयें प्या रे, नव सायरको पार ॥म०॥५

॥ पद बठुं ॥ राग काफी वेलाउल ॥

॥ अकलकला जगजीवन तेरी ॥ अकल० ॥ ए आंकणी ॥ अंत उदधियी अनंत गुण तुव, ज्ञान महा लघु बुद्धि ज्युं मेरी ॥ अक० ॥१॥ नय अरु नंग निखेप विचारत, पूरव धर याके गुण हेरी ॥ विकल्प

करत थाग नवि पाये, निर्विकल्पतें होत नयेरी ॥ ॥ अ० ॥ २ ॥ अंतर अनुनव विनु तुव पदमें, युक्ति नहीं कोउ घटत अनेरी ॥ चिदानंद प्रनु करि किरपा अब, दीजें ते रस रीज नलेरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति॥

॥ पद सातमुं ॥ राग काफी वेलाउल॥

॥ जोंलों तत्व न सूज पडेरे ॥ जौं० ॥ तौंलों मूढ नरम वस नूल्यो, मत ममता ग्रही जगथी लडे रे ॥ जौं० ॥ १ ॥ अकर रोग शुन कंप अशुन लख, नव सायर इण नांत रडे रे ॥ धान काज जिम मूरख खित्त हुड, उखर नूमीको खेत खडे रे ॥ जौं०॥ ॥ २ ॥ उचित रीत उलख विण चेतन, निसिदिन खोटो घाट घडे रे ॥ मस्तक मुगुट उचित मणी अनुपम, पग नूषण अज्ञान जडे रे॥ जौं० ॥ ३ ॥ कुमता वस मन वक्र तुरंग जिम, गहि विकल्प मग्ग मांहिं अडे रे, चिदानंद निज रूप मगन नया, तब कुतरक तोहे नाहिं नडे रे ॥ जौं० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद आठमुं ॥ राग काफी वेलाउल ॥

॥ आतम परमातम पद पावे, जो परमातमसुं लय लावे ॥ आ० ॥ सुणके शब्द कीट नृंगीको, निज तन मनकी शुधि बिसरावे ॥ देखहु प्रगट ध्यानकी

महीमा, ॥ सोई कीट भृंगी होजावे ॥ आ० ॥ १ ॥ कुसुम संग तिल तेल देख फुन, होय सुगंध फूलेल कहावे ॥ सुक गर्भगत स्वांत उदक होय, मुक्ताफल अति दाम धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ पुनपिच मंद पला लादिकमें, चंदनता ज्युं सुगंधथी आवे ॥ गंगामें जल आण आणके, गंगोदककी महीमा भावे ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ पारसको परसंग पाय फुन, लोहा कनक स्वरु प लखावे ॥ ध्याता ध्यान धरत चित्तमें इम, ध्येयरूप में जाय समावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भज समता ममता तज जन, शुद्ध स्वरूपथी प्रेम लगावे ॥ चिदानंद चित्त प्रेम मगन भया दुविधा, भाव सकल मिट जावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग काफी वेलाउल ॥

॥ अरज एक धवडीचा स्वामी, सुणहु कृपानिधि अंतर जामी ॥ अ० ॥ अति आनंद भयो मन मेरो, चंद्र वदन तुव दरशन पामी ॥ अ० ॥ १ ॥ दु संसा र असार उदधी पड्यो,तुम प्रभु भये पंचम गति गा मी ॥ कबहुं उचित नही स्वामीकूं, चित्तधरवी सेवककी खामी ॥ अ० ॥ २ ॥ हुं रागी तुं निपट निरागी, तुम हो निरह निर्मम निष्कामी ॥ पण तोहे कारण रूप

निरख मम, आतम नयो आतम गुण रामी ॥अ०॥ ॥ ३ ॥ गोप बिरुद निरजांमक माहण, प्रगट धर्यो तुम त्रिभुवन नामी ॥ ताते अवश्य तारजो मोकूं, इम विलोक धीरज चित्त गामी ॥ अ० ॥ ४ ॥ युग पूरण निधान ससी संवत, नावनगर नेटे गुणधामी ॥ चिदानंद प्रभु तुम किरपाथी, अनुनव सायर सुख विसरामी ॥ अ० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद दशमुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ मंदविषय ससि दीपतो, रवी तेज घनेरो ॥ आतम सहज स्वनावथी, विनाव अंधेरो॥मंद०॥१॥ जाग जीया अब परिहरो, नववास वसेरो ॥ नववासी आश्या ग्रही, नयो जगको चेरो ॥ मंद० ॥ २ ॥ आशतजी निराशता, पद सास ताहेरो ॥ चिदानंद निज रूपको, सुख जाण नलेरो ॥ मंद० ॥ ३ ॥ इति॥

॥ पद अगीआरमुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ जोग जुगति जाण्याविना, कहा नाम धरावे ॥ रमापति कहे रंककूं, धन हाथ न आवे ॥ जो० ॥ ॥ १ ॥ नेखधरी मायाकरी, जगकूं नरमावे ॥ पूरण परमानंदकी, सुधी रंच न पावे ॥ जो० ॥ २ ॥ मन मुंमयाविन मुंमकूं, अति घोट मुंमावे ॥ जटाजूट शि

र धारके, कोउ कांन फरावे ॥ जो० ॥ ३ ॥ उर्ध्व बाहु अधो मुखें, तन ताप तपावे ॥ चिदानंद सम ज्याविना, गिणती नवी आवे ॥ जो० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥ राग वेलाउल ॥

॥ आज सखी मेरे वालमा, निज मंदिर आये ॥ अति आनंद हीयेधरी, हसी कंठ लगाये ॥ आ० ॥ ॥ १ ॥ सहज स्वभाव जलेंकरी, रुचीधर नवराये ॥ थालभरी गुण सुखडी, निज हाथ जिमाये ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ सुरभी अनुभव रस भरी, बीडा खवराये ॥ चिदानंद मिल दंपती, मनवंछित पाये ॥ आ० ॥३॥

॥ पद तेरमुं ॥ राग विभासी ॥

॥ जूठी जगमाया नर केरी काया, जिम बादरकी छायामाइरी ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञानांजन कर खोल नयण मम, सदगुरु इणेविध प्रगट लखाइरी ॥ जू०॥ ॥ १ ॥ मूल विगत विषवेल प्रगटी इक, पत्र रहित त्रिभुवनमें छाइरी ॥ तास प्रत्र चूण खात मिरगवा, मुखबिन अचरिज देखहुं आइरी ॥ जू० ॥ २ ॥ पुरुष एक नारी नीपजाइ, तेतो नपुंसक घरमें समाइरी ॥ पुत्र जुगल जाये तिण बाला, ते जगमांहे अधिक दुःख दाइरी ॥ जू० ॥ ३ ॥ कारण बिन कार

जकी सिद्धि, किमजई मुख कही नवी जाइरी ॥ चिदा नंद एम अकल कलाकी, गतिमति कोउ विरले जन पाइरी ॥ जू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चौदमुं ॥ राग विलासी ॥

॥ देखो जवि जिनजीके जुग, चरन कमल नीके॥ ॥ देखो० ॥ ए आंकणी ॥ जिम उदयाचल उदय जयो रवि, तिम नखमाननके ॥ देखो० ॥ १ ॥ निलो त्पल सम शोज चरन छबी, रीष्ठ रतनदुके ॥देखो०॥ ॥ २ ॥ सुरजी सुमनवर, यक्षकर्दम कर, अर्चित देवन के ॥ देखो० ॥ ३ ॥ निरख चरन मन हरख जयो अ ति, वामानंद जुके ॥ देखो० ॥ ४ ॥ चिदानंद अब स कल मनोरथ, सफल जये मनके ॥ देखो० ॥ ५ ॥

॥ पद पंदरमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ अखीयां सफल जइ, अलि निरखत नेमिजिनं द ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ पद्मासन आसन प्रजु सो हत, मोहत सुरनर वृंद ॥ घूघर बाला अलख अनो पम, मुख मानुं पुनम चंद ॥ अ० ॥ १ ॥ नयन कम लदल सुक मुख नाशा, अधर बिंब सुख कंद ॥ कुंद कली दंति पंति, रसना दल शोजा अमंद ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ कंबुग्रीव जुज कमल नालकर, रकतोत्पल अं

नुचंद ॥ हृदय विशाल थाल कटी केहरी, नाभी स रोवर खंद ॥ अ० ॥३॥ कदली खंभ युग चरन सरो जस, निसदिन त्रिभुवन बंद ॥ चिदानंद आनंद मूरति. ए शिवादेवी नंद ॥ अ० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद शोलमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ विरथा जनम गमायो मूरख ॥ विर० ॥ ए आं कणी ॥ रंचक सुखरस वस होय चेतन, अपनो मू ल नसायो ॥ पांच मिथ्यात धारतुं अजहुं, साच भेद नवि पायो ॥ वि० ॥ १ ॥ कनक कामिनी अरु येथी, नेह निरंतर लायो ॥ ताहुथी तुं फिरत सोरांनयो, क नक बीज मानु खायो ॥ वि० ॥ २ ॥ जनम जरा म रणादिक दुःखमें, काल अनंत गमायो ॥ अरहट घटि का जिम कहो यांको, अंत अजहुं नवी आयो ॥ ॥ वि० ॥ ३ ॥ लख चोरासी पेर्या चोलना, नव न व रूप बनायो ॥ बिन समकित सुधारस चाख्या, गिणती कोउ न गिणायो ॥ वि० ॥ ४ ॥ एती पर नवि मानत मूरख, ए अचरज चित्त आयो ॥ चिदानंद ते धन्य जगतमें, जिणे प्रभुशुं मन लायो ॥ वि० ॥५॥

॥ पद सत्तरमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ जग सपनेकी मायारे नर ॥ जग० ॥ ए आंक

णी ॥ सुपने राज पाय कोउ रंक ज्युं, करता काज मन जाया रे॥ उघरत नयन हाथ लख खपर, मनहु मन पछताया रे॥ जग० ॥ १ ॥ चपला चमतकार जिम चंचल, नरभव सूत्र बताया रे ॥ अंजली जलसम जगपति जिनवर, आयु अथिर दरसाया रे॥ जग०॥ २ ॥ यौवन संध्याराग रूप फुनि, मलमलिन अति काया रे ॥ विणसत जास विलंब न रंचक, जिम तरूवरकी छाया रे ॥ जग० ॥ ३ ॥ सरिता वेग समान ज्युं संपति, स्वारथ सुत मित्त जाया रे ॥ आंमीस लुब्ध मीन जिम तिन संग, मोहजाल बंधाया रे ॥ जग० ॥ ४ ॥ ए संसार असार सार पण, यामें ईतना पाया रे॥ चिदानंद प्रभु सुमरनसेंती, धरीयें नेह सवाया रे ॥ जग० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद अढारमुं ॥ रागकाफी ॥

॥ मान कहा अब मेरा मधुकर ॥ मान० ॥ ए आंकणी ॥ नाभीनंदजीके चरण सरोजमे, कीजें अचल बसेरा ॥ परिमल तास लहत नित्य जेह,त्रिविध पाप सहु उतिरा ॥मान०॥ १ ॥ उदित निरंतर ज्ञान भान जिहां, तहां न मिथ्यात अंधेरा॥ संपुट होत नही तातें ते, कहां सांज कहां सवेरा ॥ मान० ॥ २ ॥ नहीतर

पछतावोगे आखर,बीत गया यो वेरा ॥ चिदानंद प्रजु पदकज सेवित, बहुरन होय जव फेरा ॥मान०॥३॥

॥ पद उगणीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ जूल्यो जमत कहावे अजान ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ आल पंपाल सकल तज मूरख, कर अनुजव रस पान ॥ जू० ॥१॥ आय कृतांत ग्रहेगो इकदिन, हरि मृग जेम अचान ॥ होयगो तन धनथी तुं न्यारो, जेम पाको तरुपान ॥ जू० ॥ २ ॥ मात तात तरुणी सुत सेंती, गरज न सरत निदान ॥ चिदानंद ए वचन हमारो, धर राखो प्यारे कान ॥जू०॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद वीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ संतो अचरिज रूप तमासा ॥ संतो० ॥ ए आंकणी ॥ कीडीके पग कुंजर बांध्यो, जलमें मकर पीयासा ॥ संतो० ॥ १ ॥ करत हलाहल पान रुचीधर, तजी अमृत रस खासा ॥ चिंतामणी तजी धरत चित्तमें, काच सकलकी आसा ॥ संतो० ॥ २ ॥ बिन बादर बरखा अति बरखत, बिनदिगबहत बतासा ॥ वज्रगलत हम देख्या जलमे, कोरा रहत पतासा ॥ ॥ संतो० ॥ ३ ॥ बेर अनादि पण उपरथी, देखत

जगत सगासा ॥ चिदानंद सोहि जन उत्तम, काप तयाका पासा ॥ संतो० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद एकवीशमुं ॥ राग धन्यासिरि ॥

॥ करले गुरुगम ज्ञान बिचारा ॥ करले० ॥ ए आंकणी ॥ नाम अध्यातम ठवण इव्यथी, नाव अध्यातम न्यारा ॥ कर० ॥ १ ॥ एक बुंद जलथी ए प्रगट्या, श्रुत सायर विस्तारा ॥ धन जिनोंनें उलट उदधीकूं, एक बुंदमें माख्या ॥ कर० ॥ २ ॥ बीज रुची धर ममता परहर, लही आगम अनुसारा ॥ परपखथी लख इणविध अप्पा, अहि कंचुकी जिम न्यारा॥ ॥ कर० ॥ ३ ॥ जास परत भ्रम नासहु त्रासहु, मिथ्या जगत पसारा ॥ चिदानंद चित्त होत अचल इम, जिम नभ ध्रूका तारा ॥ कर० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद बावीशमुं ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ अब हम ऐसी मनमें जाणी ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ परमारथ पंथ समजविना नर, वेद पुराण कहाणी ॥ अ० ॥ १ ॥ अंतरलक्ष विगत उपरथी, कष्ट करत बहु प्राणी ॥ कोटी यतन करतुपें लहत नहिं, मथतां निस दिन पाणी ॥ अ० ॥ २ ॥ लवण पुतली थाह लेणकूं, सायर माहिं समाणी ॥ तामें

मिल तद रूप भईते, पलट कहे कोंण वाणी ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ खटमत मिल मातंग अंग लख, युक्ति बहोत वखाणी ॥ चिदानंद सरवंग विलोका, तत्वारथ ले ताणी ॥ अ० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद त्रेवीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ सोहं सोहं सोहं सोहं, सोहं सोहं रटना लगीरी ॥ ए आंकणी ॥ इंगला पिंगला सुखमना साधके, अरुण प्रतिथी प्रेम पगीरी ॥ वंकनाल खट चक्र भेदके, दशमें द्वार शुन ज्योति जगीरी ॥ सोहं०॥ ॥ १ ॥ खुलत कपाट घाट निज पायो, जनम जरा भय भीति भगीरी ॥ काच सकलदे चिंतामणी ले, कुमता कुटीलकूं सहज ठगीरी ॥ सोहं० ॥ २ ॥ व्यापक सकल स्वरूप लख्यो इम, जिम नभमें मग लहत खगीरी ॥ चिदानंद आनंद मूरति, निरख प्रेम भर बुद्धि थगीरी ॥ सोहं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोवीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ अब लागी अब लागी अब लागी अब लागी, अब लागी अब लागी अब प्रीत सहीरी ॥ अब०॥ ए आंकणी ॥ अंतरगतकी बात अली शुन, मुखथी मोपें न जात कहीरी ॥ चंदचकोरकी उपमा इण समे, साच

कहुं तोहे जात वहीरी ॥ अ० ॥ १ ॥ जलधर बुंद समुद्र समाणी, जिन्न करत कोउ तास महीरी ॥ द्वैत नावकी टेव अनादी, छिनमें ताकुं आज दहीरी ॥ अ०॥ २ ॥ विरहव्यथा व्यापत नही आली, प्रेमधरी पीयु अंग ग्रहीरी ॥ चिदानंद चूके किम चातुर, असो अवसर सार लहीरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद पच्चीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ प्रीतम प्रीतम प्रीतम प्रीतम, प्रीतम प्रीतम करतीमें हारी ॥ प्री० ॥ ए आंकणी ॥ असें निठुर नये तुम कैसें, अजहुं न लीनी खबर हमारी ॥ कवण नांत तुम रीजत मोपें, लख न परत गत रंच तिहारी ॥ प्री० ॥ १ ॥ मगन नए नित्य मोह सुता संग, विचरतहो स्वछंद विहारी ॥ पण इण वातनमें सुण वालम, शोजा नहीं जग मांहिं तिहारी ॥प्री०॥ ॥२॥ जो ए वात तात मम सुणोहें, मोहरायकी करीयें खुवारी ॥ मम पीयर परिवारके आगल, कुमता कहा ते रंक बिचारी ॥प्री०॥३॥ जतन कोटी करी धोवत निसदिन, उजरी न होवत कामर कारी ॥ तिम साची शिखामण मनमां, धारत नाहीं नेक अनारी ॥ प्री० ॥ ४ ॥ कहेत विवेक सुमति सुण जिम

तिम, आतुर होयने बोले प्यारी ॥ चिदानंद निज घर आवेंगे, दोय दिनांमें जमर समारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥

॥ पद छवीशमुं ॥ राग आशाउरी गोडी ॥

॥ निरपक्ष विरला कोइ ॥ अवधू० ॥ निरपक्ष० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ देख्या जग सहु कोई ॥ अवधू० ॥ समरस नाव नला चित्त जाके, थाप उथाप न होई ॥ अविनासीके घरकी बातां, जानेगे नर सोई ॥ ॥ अव० ॥ १ ॥ राव रंकमें नेद न जाने, कनक उपल सम लेखे ॥ नारी नागिणीको नही परिचय, तो शिवमंदिर देखे ॥अव०॥२॥ निंद्यास्तुति श्रवण सुणीने, हर्ख शोक नवी आणे ॥ ते जगमें जोगीसर पूरा, नित्य चढते गुण गणे ॥ अव० ॥ ३ ॥ चंद समान सोम्यता जाकी, सायर जेम गंनीरा ॥ अप्रमत्त नारंम परे नित्या, सुरगिरि सम सुची धीरा ॥ अव० ॥ ॥ ४ ॥ पंकज नाम धराय पंकशुं, रहत कमल जिम न्यारा ॥ चिदानंद इस्या जन उत्तम, सो साहेबका प्यारा ॥ अव० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद सत्तावीशमुं ॥ राग बिहाग टोडी ॥

॥ लघुता मेरे मन मानी, लइ गुरुगम ज्ञान नीसानी ॥ लघु० ॥ ए आंकणी ॥ मद अष्ट जिनोंने

धारे, दुर्गति ते गये बिचा रे ॥ देखो जगतमें प्रानी, दुःख लहत अधिक अभिमानी ॥ लघु० ॥ १ ॥ श सी सूरज बडे कहावे. ते राहुके बस आवे ॥ तारा गण लघुता धारी, सुरभानु भीत निवारी ॥ लघु० ॥ ॥ २ ॥ छोटी अति जोयण गंधी, लहे खटरस स्वाद सुगंधी ॥ करटी मोटाइ धारे, ते छार शीस निज मारे॥ ॥ लघु० ॥ ३ ॥ जब बालचंद्र होय आवे, तब सहु जग देखण धावे ॥ पूनमदिन बडा कहावे, तव खी ण कला होय जावे ॥ लघु० ॥ ४ ॥ गुरुवाइ मनमें वे दे, नृप श्रवण नाशिका छेदे ॥ अंगमांहे लघु कहावे, ते कारण चरण पूजावे ॥ लघु० ॥ ५ ॥ सिसु राजधा ममें जावे, सखी हिलमिल गोद खिलावे ॥ होय बडा जांण नही पावे, जावेतो शीश कटावे ॥ लघु० ॥ ६ ॥ अंतर मद भाव वहावे, तब त्रिभुवन नाथ कहावे ॥ इम चिदानंद ए गावे, रहणी विरला कोउ पा वे ॥ लघु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अठावीशमुं ॥ राग टोडी ॥

॥ कथणी कथे सहु कोइ, रहणी अतिदुर्लभ हो इ ॥ कथ० ॥ ए आंकणी ॥ शुक रामको नाम वखा णे, नवी परमारथ तस जाणे ॥ या विध भणी वेद

सुणावे, पण अकल कला नवि पावे ॥ कथ० ॥ १ ॥ षटत्रीश प्रकारें रसोई, मुख गणतां तृप्ति न होइ ॥ सीसु नाम नहीं तस लेवे, रस स्वादत सुखयंति बे वे ॥ कथ० ॥ २ ॥ वंदीजन कडखा गावे, सुणी सूरा सीस कटावे ॥ जब रूंमसूंमता नासे, सहु आगल चारण नासे ॥ कथ० ॥ ३ ॥ कहणी तो जगत मजूरी, रहणीहे बंदी हजूरी ॥ कहणी साकर सम मीठी, रहणी अति लागत नीठी ॥ कथ० ॥ ४ ॥ जब रहणीका घर पावे, कथणी तब गिणती आवे ॥ अब चिदानंद इम जोई, रहणीकी सेज रहे सोई ॥ ॥ कथ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ओगण त्रीशमुं ॥ राग आसाउरी ॥

॥ ज्ञानकला घट नासी जाकूं ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ तनधन नेह नही रह्यो ताकूं, छिनमें नयो उदासी ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ हुं अविनासी नाव जगतके, निश्चें सकल विनासी ॥ एहवी धार धारणा गुरुगम, अनुनव मारग पासी ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ में मेरा ए मोह जनित जस, ऐसी बुद्ध प्रकासी॥ते निसंग पग मोह सीसदे, निश्चें शिवपुर जासी ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ सुमता नई सुखी इम सुनके, कुमता नई उदासी ॥

चिदानंद आनंद लह्यो इम, तोर करमकी पासी ॥ जा० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद त्रीशमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ अनुनव आनंद प्यारो अब मोहें ॥ अनुनव० ॥ ए आंकणी ॥ एह विचार धारतूं जडथी, कनक उपल जिम न्यारो ॥ अ० ॥ १ ॥ बंधहेतु रागादिक परणती, लखपर पख सहू न्यारो ॥ चिदानंद प्रज्ञु कर किरपा अब, नव सायरथी तारो ॥ ॥ अ० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकत्रीशमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ उंघट विणसत वार न लागे ॥ उंघ० ॥ ए आंकणी ॥ याके संग कहा अब मूरख, बिन बिन अधिको पागे ॥ उं० ॥ १ ॥ काचाघडा काचकी सीसी, लागत ठणका नांगे ॥ सडण पडण विध्वंस धरम जस, तसथी निपुण निरागे ॥ उं० ॥ २ ॥ आधि व्याधि व्यथा डुःख इण नव, नरकादिक फुनी आगे ॥ मृगहु संग चलत नवि पोष्या, मारगहुंमें त्यागे ॥ उं० ॥ ॥ ३ ॥ मदठक ठाक गहेल तज विरला, गुरु किरपा कोउ जागे ॥ तनधन नेह निवारि चिदानंद, चलीयें ताके सागे ॥ उं० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बत्रीशमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ अवधू पीवो अनुनव रस प्याला, कहत प्रेमम ति वाला ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ अंतर सप्तधांत र स नेदी, परम प्रेम उपजावे ॥ पूरव नाव अवस्था प लटी, अजब रूप दरसावे ॥ अ० ॥ १ ॥ नख शिख रहत खुमारी जाकी, सजल सघन घन जैसी ॥ जिण ए प्याला पिया तिणकूं, औरकथ फरति कैसी ॥ अ० ॥ ॥ २ ॥ अमृत होय हलाहल जाकूं, रोग सोग नवि व्यापे ॥ रहत सदा गरगाय नसामें, बंधन ममता का पे ॥ अ० ॥ ३ ॥ सत संतोष हीयामें धारे, आतम काज सुधारे ॥ दीन नाव हिरदे नही आणे, अपनो बिरुद संनारे ॥ अ० ॥ ४ ॥ नावदया रणथंन रोप के, अनहद तूर बजावे ॥ चिदानंद अतुलिबल राजा, जीत अरि घर आवे ॥ अ० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद तेंत्रीशमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ मारग साचा कोउ न बतावे, जासुं जाय पूछी यें तेतो, अपणी अपणी गावे ॥ मारग० ॥ ए आंक णी ॥ मतवारा मतवाद वाद धर, थापत निज मत नीका ॥ स्यादवाद अनुनव बिन ताका, कथन ल त मोहे फीका ॥ मा० ॥ १ ॥ मतवेदांत ब्रह्म पद ध्या

वत; निश्चे पख उरधारी ॥ मीमांसक तो कर्म बदे ते, उदय जाव अनुसारी ॥ मा० ॥ २ ॥ कहत बौधते बुद्ध देव मम, क्षणिक रूप दरसावे ॥ नैयायिक नय वाद ग्रही ते, करता कोउ ठेरावे ॥ मा० ॥ ३ ॥ चार वाक निज मनो कल्पना, सून्य वाद कोउ ठाणे ॥ तिनमें जये अनेक जेद ते, अपणो अपणी ताणे ॥ ॥ मा० ॥ ४ ॥ नय सरवंग साधना जामें, ते सरवंग कहावे ॥ चिदानंद औसा जिन मारग, खोजी होय सो पावे ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोत्रीशमुं ॥ राग आशाउरी ॥

॥ अबधु खोल नयन अब जोवो ॥अ०॥ डिगमुडित कहा सोवो ॥ अबधु०॥ ए आंकणी ॥ मोह निंद सो वत तुं खोया, सरव समाल अपाणा ॥ पांच चोर अजहुं तोय लूंटत, तास मरम नहिं जाण्या ॥ अबधु० ॥ १ ॥ मली चार चंमाल चोकडी, मंत्री नाम धराया ॥ पाइ कयफ पीयाला तोहे, सकल मुलक ठगखाया ॥ अवधू० ॥ २ ॥ शत्रुराय माहा बल जोद्धा, निज निज सेन सजाये ॥ गुणठाणेमें बांध मोरचे, घेरया तुम पुर आये ॥ अवधू०॥ ३ ॥ परमादि तुं होय पिया रें, परवशता दुःख पावे ॥ गया राज पुर

सारथ सेंती, फिर पाछा घर आवे ॥ अवधू० ॥ ४ ॥ सांजली वचन विवेक मित्तका, छिनमें निजदल जो डयुा ॥ चिदानंद रामतसी रमतां, ब्रह्म बंका गढ तोडयुा ॥ अवधू० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांत्रीशमुं ॥ राग जैरव ॥

॥ वस्तुगतें वस्तुनुं लक्षण, गुरुगम विण नही पावे रे ॥ गुरुगम विन नवी पावे कोउ, नटक नटक च रमावे रे ॥व०॥१॥ ए आंकणी ॥ नवन आरीसे स्वान कूकडा, निज प्रतिबिंब निहारे रे ॥ इतर रूप मनमांहें बिचारी, महा जुध्द विस्तारे रे ॥ व० ॥ २ ॥ निरमल फिटक सिला अंतरगत, करीवर लखपर छांहि रे ॥ दसन तुराय अधिक डुःख पावे, द्वेषधरत दिल मांहि रे ॥ व० ॥ ३ ॥ ससले जाय सिंघकूं पकडयो, दूजो दीयो देखाई रे ॥ निरख हरी ते जाण दूसरो, पडयो जंप तिहां खाई रे ॥ व० ॥ ४ ॥ निजछाया वेताल नरम धर, मरत बाल चित्त मांहि रे ॥ रज्जु सर्पकरी कोउ मानत, जौंलों समजत नांहि रे ॥व०॥ ॥ ५ ॥ नलनी भ्रम मरकट मुठी जिम, भ्रमवस अति डुःख पावे रे ॥ चिदानंद चेतन गुरुगम विन, मृग तृष्णा धरी धावे रे ॥ व० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद छत्रीशमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ लाालख्याल देख तेरे,अचरिज मन आवे ॥ ला ला० ॥ ए आंकणी ॥ धारे बहु रूप भिन्न, मांहे होय रंकभूप ॥ आपतो अरूप सहु जगमें कहावे ॥ ला० ॥ ॥ १ ॥ करता अकरताहुं, हरताके भरताज्युं ॥ अ साहे जो कोण तोहे, नाम ले बतावे ॥ ला० ॥२॥ एकहुमें एक है, अनेक है अनेकहुंमे ॥ एकन अनेक कछु, कह्यो नही जावे ॥ ला० ॥३ ॥ उपजे न उपज त, मूउ न मरत कछु ॥ खटरस भोगकरे, रंचहु न खावे ॥ ला० ॥ ४ ॥ परपरणित संग, करत अनोपे रंग ॥ चिदानंद प्या रे, नट बाजीसी दिखावे ॥ ॥ ला० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद सडत्रीशमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ जागरे बटाउ अब भई भोर वेरा ॥ जा० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ भया रविका प्रकाश, कुमुद थए वि कास ॥ गया नास प्या रे, मिथ्या रेनका अंधेरा ॥ ॥ जा० ॥ १ ॥ सूता किम आवे घाट, चालवी जरूर वाट ॥ कोइ नांही मित्त, परदेशमें ज्युं तेरा ॥ जा० ॥ ॥ २ ॥ अवसर वीत जाय, पीछें पिछतावो थाय ॥ चिदानंद निह्चें, एमान कहा मेरा ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ पद अडत्रीशमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ चालणां जरूर जाकूं, ताकूं कैसा सोवणा ॥ ॥ चा० ॥ ए आंकणी ॥ भया जब प्रातःकाल, माता धवरावे बाल ॥ जग जन करत सकल मुख धोवणा ॥ चा० ॥ १ ॥ सुरभिके बंध टूटे, घूघड भये अपूठे ॥ ग्वाल बाल मिलके, विलोवत वलोवणा ॥ ॥ चा० ॥ २ ॥ तज परमाद जाग, तूंभी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा न खोवणा ॥ ३ ॥

॥ पद उगणचालीशमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ जाग अविलोक निज, शुद्धता स्वरूपकी ॥ जाग० ॥ ए आंकणी ॥ जामें रूप रेख नांही, रंच परपर छांही ॥ धारे नही ममता, सुगुण भव कूपकी ॥ ॥ जा० ॥ १ ॥ जाकी है अनंत ज्योत, कबहुं न मंद होत, ॥ चार ज्ञान ताके सोत, उपमा अनूपकी ॥ ॥ जा० ॥ २ ॥ उलट पुलट ध्रुव, सत्तामें बिराजमान ॥ शोभा नाहिं कहि जात, चिदानंद भूपकी ॥ जा० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चालीशमुं ॥ राग प्रभाती ॥

॥ ऐसा ग्यान बिचारो प्रीतम, गुरुमुख सैली धारी रे ॥ ऐ० ॥ ए आंकणी ॥ स्वामीकी शोभा करे सा

री, तेतो बाल कुमारी रे ॥ जे स्वामी ते तात तेहनो, कह्यो जगत हितकारी रे ॥ ऐसा० ॥ १ ॥ अष्ट दी करी जाई बाला, ब्रह्मचारणी जोवे रे ॥ परणावी पूरण चंदाथी, एक सेज नवी सोवे रे, ऐसा० ॥ २ ॥ अष्ट कन्याका सुत वली जाये, द्वादश ते वली सोई रे ॥ ते जगमांहे अजनमे कहीयें, करता नवी तस कोई रे ॥ ॥ऐ०॥३॥ मात तात सुत एकदिन जनमे, छोटे बडे कहावे रे ॥ मूल तिनोंका सहु जग जाणे,साखा भेद न पावे रे ॥ ऐसा० ॥ ४ ॥ जो इणके कुल केरी शाखा, जाणे खोज गमावे रे ॥ खोज जाय जगमे तोपण ते, सहुथी बडे कहावे रे ॥ ऐसा० ॥ ५ ॥ अथवा नर नारी नपुंसक, सहुकी एछे माता रे ॥ षट मत बालकुमारी बोलत, ए अचरिजकी बाता रे ॥ ऐसा० ॥ ६ ॥ लोक लोकोत्तर सहु कारजमें, या बिन काम न चाले रे ॥ चिदानंद ए नारि सुमरन, मुनि मनथी नवी टाले रे ॥ ऐसा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद एकतालीशमुं ॥ राग प्रभाती छगोने ॥ मोरा आतमराम जिनमुख जोवा जइयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ विषय वासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागो रे ॥ ए आंकणी ॥ तप जप संजम दानादिक सहु,

गिणति एक न आवे रे ॥ इंद्रिय सुखमें जौंलौ ए मन, वक्र तुरंग जिम धावे रे ॥विषय०॥१॥एक एकके कारण चेतन, बहुत बहुत दुःख पावे रे ॥ तेतो प्रगटपणे जगदीश्वर, इण विधभाव लखावे रे ॥ विषय० ॥२॥ मनमथ वश मातंग जगतमें,पर वशता दुःख पावे रे॥ रसना लुब्ध होय जख मूरख, जाल पड्यो पछतावे रे ॥वि०॥३॥ घ्राण सुवास काज सुन भमरा, संपुट मांहे बंधावे रे ॥ ते सरोज संपुट संयुत फुन,करटीके मुख जावे रे ॥ वि० ॥४॥ रूप मनोहर देख पतंगा, पडत दीपमां जाईरे ॥ देखो याकूं दुःख कारनमें, न यन भये है सहाई रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ श्रोतइंद्रिय आसक्त मिरगला, छीनमें सीस कटावे रे ॥ एक एक आसक्त जीव इम, नाना विध दुःख पावे रे ॥ वि० ॥ ॥ ६ ॥ पंच प्रबल वर्त्ते नित जाकूं, ताकूं काहा ज्युं कहीयें रे ॥ चिदानंद ए वचन सुणीने, निज स्वभाव में रहीयें रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ अजित जिनंद देव, थिरचित्त ध्याईयें ॥ थिरचित्त ध्याईयें, परम सुख पाईयें ॥ अजि० ॥ ए आंकणी॥ अंती.नीको भाव जल, विगत ममत मल ॥ ऐसो

ज्ञान सरथी, सुजन नर लाईयें ॥ अजि० ॥ १ ॥ केशार सुमति घोरी, नरी नावना कचोरी ॥ करमन नोरी अंग, अंगीयां रचाइयें ॥ अजि० ॥ २ ॥ अनय अखंम क्यारी, सीचके विवेक वारी ॥ सहज सुनावमें, सुमन नीपजाईये ॥ अजि० ॥ ३ ॥ ध्यान धूप ज्ञान दीप, करी अष्टकर्म जीप ॥ डुविध सरूप तप, नैवेद्य चढाईयें ॥ अजि० ॥ ४ ॥ लीजीयें अमल दल, ढोईये सरस फल ॥ अक्षत अखंम बोध स्वस्तिक लखाईयें ॥ अजि० ॥ ५ ॥ अनुनव नोर नयो, मिथ्यामत दूर गयो ॥ करि जिन सेव इम, गुण फुनि गाईयें ॥ अजि० ॥६॥ इणविध नाव सेव, कीजीयें सुनित्य मेव॥ चिदानंद प्यारे इम, शिवपुर पाईयें ॥ अजि० ॥ ७ ॥

॥ पद तेंतालीशमुं ॥ राग काफी ॥

॥ जौंलौ अनुनव ज्ञान रे, घटमें प्रगट नयो नही ॥ जौंलौ० ॥ए आंकणी॥ तौंलौ मनथिर होत नहीं छिन, जिम पीपरको पान ॥ वेद नण्यो पण नेद न जान्यो, पोथी थोथी ज्ञान रे ॥ घटमें० ॥ १ ॥ रस नाजनमें रहत इव्य नित्य, नहिं तस रस पहिचान ॥ तिम सुक पाठी पंमितकूं पण, प्रवचन कहत अज्ञान रे ॥ घटमें० ॥ २ ॥ सार लह्या विण नार कह्यो श्रु

त. खर दृष्टांत प्रमाण ॥ चिदानंद अध्यातम सैली, स मज परत एकतांन रे ॥ घटमें० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चुमालीशमुं ॥ राग काफी ॥

॥ अकथ कथा कुण जाणे हो, तेरी चतुर सनेही॥ ॥ अकथ० ॥ ए आंकणी ॥ नयवादी नयपक्ष ग्रही ने, जूठा जगडा ठाणे ॥ निरपख लख चख स्वाद सु धाको, तेतो तनक न ताणे हो ॥ तेरी० ॥ १ ॥ छिनमें रूप रचत नानाविध, आप अरूप बखाने ॥ छिन मूर ख ज्ञानी होये छिनमें, न्याय सकल छिन जाणे हो ॥ ॥ तेरी० ॥ २ ॥ चोर साध कबु कह्यो न परतु है, ल ख नाना गुणठाणे ॥ जिस्यो हेतु तिस्यो चिदानंद, चि त्त सरधा इम आणे हो ॥ तेरी० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पीस्तालीशमुं ॥ राग काफी ॥

॥ अलख लख्या किम जावे हो, ऐसी कोउ जुग ती बतावे ॥ अ० ॥ ए आंकणी ॥ तन मन वचनाती त ध्यानधर, अजपा जाप जपावे ॥ होय अमोल लो लता त्यागी, ज्ञान सरोवर न्हावे हो ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ शुद्ध स्वरूपमें, सक्ति संभारत, ममता दूर वहावे ॥ कन क उपल मल भिन्नता काजे, जोगानल उपजावे हो ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ एक समय समश्रेणी रोपी, चि

दानंद इम गोवे ॥ अलख रूप होइ अलख समावे, अ लख नेद इम पावे हो॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बेंतालीशमुं ॥ राग काफीनी होरी ॥

॥ अनुनव मित्त मिलायदे मोकूं, श्याम सुंदर वर मेरा रे ॥ अनु० ॥ ए आंकणी ॥ शीयल फाग पिया संग रमुंगी, गुण मानुंगी में तेरा रे॥ ज्ञान गुलाल प्रेम पीचकारी, शुचि श्रद्धा रंग नेरा रे ॥ अ० ॥ १ ॥ पंच मिथ्यात निवार घरुंगीमें, संवर वेश नलेरा रे ॥ चिदानंद ऐसी होरी खेलत, बहुरन होय नव फेरा रे ॥ अ० ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ पद शडतालीशमुं ॥ राग काफीनी होरी ॥

॥ एरि सुख होरी गोवोरी, सहज श्याम घर आए सखी सुख० ॥ ए आंकणी॥ नेद ज्ञानकी कुंज गलनमें, रंग रचावोरी॥ सखी सुख० ॥१॥ शुद्ध श्रद्धान सुरंग फूलके, मंमप गवोरी ॥ एरि घर मंमप गवोरी ॥ सखी० ॥ २ ॥ बावना चंदन शुननाव अरगजा, अंग लगावोरी ॥ एरि पीया अंग लगावोरी ॥ सखी० ॥ ३ ॥ अनुनव प्रेम पीयाले प्यारी, नर नर पावोरी ॥ कंतकूं नरनर पावोरी ॥ सखी० ॥४॥

चिदानंद समता रस मेवा, हिल मिल खावोरी ॥
सहज श्याम घर आए, सखी मुख होरी गावोरी ॥५॥

॥ पद अडतालीशमुं ॥ राग जंगलो काफी ॥

॥ जगमें न तेरा कोई, नर देखहु निहचें जोई॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥ सुत मात तात अरु नारी, सहु स्वारथके हितकारी ॥ बिन स्वारथ शत्रु सोई ॥ जग० ॥ १ ॥ तुं फिरत माहा मदमाता, विषयन संग मूरख राता ॥ निज सघली सुधबुद्ध खोई ॥ जग० ॥ २ ॥ घट ज्ञानकला नवि जाकूं, पर निज मानत सुन ताकूं ॥ आखर पिछतावा होई ॥ जग० ॥ ३ ॥ नवि अनुपम नरजव हारो, निज शुद्ध स्वरूप निहारो ॥ अंतर ममता मल धोई ॥ जग० ॥ ४ ॥ प्रजु चिदानंदकी वाणी, धारतुं निश्चें जग प्राणी ॥ जिम सफल होत जव दोई, जग० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ पद ओगणपचाशमुं ॥ राग जंगलो काफी ॥

॥ जूठी जगतकी माया, जिणे जाणी जेद तिणे पाया ॥ जू० ॥ ए आंकणी ॥ तन धन जोबन सुख जेता, जाणहु अथिर सुख तेता, नर जिम बादलकी छाया ॥ जू० ॥ १ ॥ जिम अनित्य जाव चित्त आया, लख गलित जमजव काया ॥ बूफे करकंमूरा

या ॥ जू०॥२॥ इम चिदानंद मन मांही, कछु करी यें ममता नांही ॥ सदगुरुश्रें नेद लखाया ॥जू०॥३॥

॥ पद पच्चाशमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ आतम ध्यान समान जगतमें ॥ आ० ॥ साधन नवी कोउ आंन ॥ जग० ॥ ए आंकणी ॥ रूपातीत ध्यानके कारण, रूपस्थादिक जांन ॥ ता हुमें पिंमस्थ ध्यान पुनः, ध्याताकूं परधान ॥जग०॥ ॥ १ ॥ ते पिंमस्थ ध्यान किम करियें, ताको एम विधान ॥ रेचक पूरक कुंजक शांतिक, कर सुखमन घर आंन ॥ जग० ॥ २ ॥ प्रान समान उदान अव्यानकूं, सम्यक् ग्रहहुं अपान ॥ सहज सुनाव सुरंग सनामें, अनुजव अनहद तांन ॥ जग० ॥ ॥ ३ ॥ कर आसन धर सुचि सममुद्रा, ग्रही गुरुगम ए ज्ञान ॥ अजपा जाप सोहं सु समरन,कर अनुनव रस पान ॥ जग० ॥ ४ ॥ आतम ध्यान नरतचक्री लह्यो, नवन आरीसा ज्ञान ॥ चिदानंद शुन ध्यान जोग जन, पावत पद निरवाण जग० ॥ ५ ॥इति॥

॥ पद एकावन्नमुं ॥ राग शोरठ गिरनारी ॥

॥ प्रनु मेरो मनडो हटक न माने ॥ प्रनु० ॥ ए आंकणी ॥ बहुत नांत समजायो याकूं, चोडेहू अरु

ठाने ॥ पण इम शीखामण कछु रंचक, धारत नवी निज काने ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ छिनमें रुष्ट तुष्टही छिनमें, राव रंक छिन मांहि ॥ चंचल जेम पताका अंचल, तेह विगति इण मांहि ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ वक्र तुरंग जिम सुलटी शिक्षा, तज उलटी कु ठांने ॥ विषमगति अति याकी साहेब, अतीशयधर कोउ जांने ॥ प्रभु० ॥३॥ अति उगतियें कहुं हुं तुमथी, तुमबिन कोउ न सयांने ॥ चिदानंद प्रभु ए वीनतिका, अवतो लाजछे थांने ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बावनमुं ॥ राग शोरठ मलार ॥

॥ तारोजी राज तारोजी राज, दीनानाथ अब मोहे तारोजी राज ॥ ए आंकणी ॥ पूरव पुण्य उदय तुम भेटे, तारण तरण जिहाज ॥ दीना० ॥ १ ॥ पतीत उधारन तुम पण धार्यो, हुं पतितन सिरताज ॥ दी० ॥ २ ॥ आगें अनेक उधारे तदपि न, कठिनता मल्यो आज ॥३॥ इणे अवसरें जिम तिम करी राखीयें, बिरुद ग्रहेकी लाज॥दी०॥४॥चिदानंद सेवक जिन साहेब, नीको बन्योहे समाज ॥दी०॥५॥

॥ पद त्रेपनमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ आवोजी राज आवोजी राज, साहेबायें माहा

रे मोलें आवोजी राज ॥ ए आंकणी ॥ सीस नमाय करजोडी कहत हूं, जरते कौन जरावो ॥ हस हस नाथ जरे पर अब तुम, काहेकूं लोन लगावो ॥ साहे० ॥ १ ॥ हमकूं त्याग पीया शोक सदन तुम, विन बोलाए जावो ॥ जा कारनही मेर नही आवत, ते कोउ चूक देखावो ॥ साहे० ॥ २ ॥ कुमता कुटि लके बस इम साहेब, काहेकूं लोक हसावो ॥ तुमकूं कवन शीखावे तुमतो, औरनकूं समजावो ॥ साहे० ॥ ३ ॥ वाके वस वरति तुम नायक, जे जे विध डुख पावो ॥ ते सहु ढानो नही कोउ मोथी, काहेकूं प्रगट कहावो ॥ साहे० ॥ ४ ॥ चिदानंद सुमताको बचन सुन, नेज्यो हरख वधावो ॥ तुम मंदिर आवत प्रभु प्यारी, करीयें न मन पछतावो ॥साहे०॥५॥ इतिपदं॥

॥ पद चोपनमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ गढगिरनार रूडो लागेछेजी, थाको गढ गिरनार ॥ ए आंकणी ॥ नार अढार अपार केउ तिहां, वनराजी विस्तार ॥ निर्मल नीर समीर वहत नित्य, पंथिक जन मनोहार ॥ रूडो० ॥ १ ॥ शुद्ध समाधि विगत उपाधि, जोगीसर चित्तधार ॥ करत गंभीर गुहामें निसदिन, गुरुगम ज्ञान बिचार ॥ रूडो० ॥ २ ॥ क

क्षायिक त्रण्य तिहां रे, शोनत जगदाधार ॥ चिदा
नंद प्रनु अब मोहे तारो, जिम तारी निज ना
र ॥ रूडो० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पच्चावन्नमुं ॥ राग ॥ सोयणी ॥

॥ अनुनव ज्योति जगीठे, हीये हमारे बे ॥अ०॥
॥ ए आंकणी ॥ कुमता कुटिल कहा अब करिहां, सु
मता हमारी लगीठे ॥ अ० ॥ १ ॥ मोह मिथ्यात
निकट नवी आइ हो, नव परिणत ज्युं पगीठे ॥
॥ अ० ॥ २ ॥ चिदानंद चित्त प्रनुके नजनमां, अनु
पम अचल नगीठे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ठपन्नमु ॥ राग शोरठ ॥

॥ सरण तिहारे गहीठे चंद्रप्रनुजी बें ॥ स० ॥
॥ ए आंकणी ॥ जनम जरा मरणादिक केरी, पीडा
बहुत सहीठे ॥ स० ॥ १ ॥ परदुःख नंजन नाथ वि
रुद तुव, तातें तुमथी कहीठे ॥ स० ॥ २ ॥ चि
दानंद प्रनु तुमारे दरसथी, वेदना अशुन मही
ठे ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सत्तावनमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ समज परी मोहे समज परी ॥ जग माया अब
जूठी ॥ मोहे समज०॥ए आंकणी॥ कालह कालह तुं

क्या करे मूरख, नांही नरुसा पल एक घरी ॥जग०
॥ १ ॥ गाफिल छिन नर नांही रहो तुम, शिरपर
घूमे तेरे काल अरी ॥ जग० ॥ २ ॥ चिदानंद ए
बात हमारी प्यारे, जाणो मित्त मनमांहे खरी ॥३॥

॥ पद अठावनमुं ॥ राग केरबो ॥

॥ हांरे चित्तमे धरो प्यारें चित्तमें धरो, एती
शीख हमारी, प्यारे अब चित्तमें धरो ॥ ए आंक
णी ॥ थोडासा जीवनका काज अरे नर, काहेकूं छल
परपंच करो ॥ एती० ॥ १ ॥ हांरे कूड कपट परद्रोह
करत तुम, अरे नर परजवथी न मरो ॥ एती० ॥ २ ॥
चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरण नव
दुःखमें परो ॥ एती० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ओगणशठमुं ॥ राग मलार ॥

॥ ध्यान घटा घन छाए, सुदेखो माई ॥ ध्यान० ॥
ए आंकणी ॥ दम दामिनी दमकत दहु दिस अति,
अनहद गरज सुनाए ॥ सु० ॥ १ ॥ मोटी मोटी
बुंद बरखत विसुधा रुची, प्रेम परम जर लाये ॥सु०॥
॥ २ ॥ चिदानंद चातुक अति तरपत, शुद्ध शुद्धाजल
पाये ॥ सु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद शारमुं राग मल्हार ॥

॥ मत जावो जोर बिछोर, वालम अब मत० ॥ ए आंकणी ॥ पीउ पीउ पीउ रटत बपैया, गरजत घन अति घोर ॥ वालम० ॥ १ ॥ चम चम चम चम चमकत चपला, मोर करत मिल सोर ॥वालम०॥ २॥ उमग चलि सरिता सायर मुख, नरगए जल चिहुं ओर ॥ वालम० ॥ ३ ॥ उठी अटारी रयण अंधारी, विरहा करत जकजोल ॥ वालम० ॥ ४ ॥ चिदानंद प्रनु एकवार कह्यो, जाण्यो वार करोर ॥वालम०॥ ५॥

॥ पद एकशरमुं ॥ राग बिहाग ॥

॥ पीया पीया पीया, बोल मत पीया पीया पीया॥ पी०॥ए आंकणी॥ रे चातुक तुम शब्द सुणतें मेरा, व्याकुल होत हे जीया ॥ फूटत नांहि कठिन अति घन सम, निठुर नया ए हीया ॥बो०॥१॥ एक शोक डुःख दाइ कंत जिने, कर कामण वसकीया ॥ दूजे बोल बोल खग पापी, तुं अधिका डुःख दीया ॥२॥ करण प्रवेश उठी होइ व्याकुल, विरहानल जल तिया ॥ चिदानंद प्रनु इन अवसर मिल, अधिक जगत जसलीया ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद बासठमुं ॥ अजितजिण दसुंप्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ परमातम पूरण कला, पूरण गुण हो पूरण जन आश ॥ पूरण दृष्टी निहालीयें, चित्त धरियें हो अमची अरदास ॥ परमा० ॥ १ ॥ सर्व देश घाति सहु, अघातिहो कर घात दयाल ॥ वास कीयो शिव मंदिरें, मोहे वीसरीहो नमतो जग जाल ॥ परमा० ॥ २ ॥ जग तारक पदवी लही, तास्या सहीहो अपराधी अपार ॥ तात कहो मोहे तारतां, किम कि नोहो इणे अवसरें वार ॥ परमा० ॥ ३ ॥ मोह महा मद गकथी, हुं रकीओहो शुध नांहि लगार ॥ उ चित सही इणे अवसरे, सेवकनीहो करवी संभाल ॥ परमा० ॥ ४ ॥ मोह गयां जो तारेसो, तिणवेला हो कहा तुम उपगार ॥ सुख वेला सज्जन घणा, दुःख वेलाहो विरला संसार ॥ परमा० ॥ ५ ॥ पण तुज दरिशन जोगथी, थई हृदयेंहो अनुभव परकाश ॥ अनुभव अभ्यासी करे, दुःखदाईहो सहु कर्म विनाश ॥ परमा० ॥ ६ ॥ कर्मकलंक निवारीने, निजरूपेंहो रमे रमता राम ॥ लहत अपूरव भावथी, इण रीतेंहो तुम पद विश्राम ॥ पू० ॥ ७ ॥ त्रिकरण जोगें

वीनवुं, सुखदाईहो शिवादेवी नंद ॥ चिदानंद मनमें सदा, तुम आपोहो प्रभु नाण दिणंद ॥ परमा० ॥८॥

॥ पद त्रेशठमुं ॥ उड़ जमरा कांकणीपर बैठी ॥

॥ नथणीसें ललकारुंगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीशंखेसर पासजिनंदके, चरणकमल चित्त लाउंगी ॥ सुणजोरे सज्जन नित्य ध्याउंगी ॥ ए आंकणी ॥ एहवा पण दृढधारी होयेमें, अन्यद्वार नवी जाउंगी ॥ सु० ॥ १ ॥ सुंदर सुरंग सलूनी मूरत, निरख नयन सुख पाउंगी ॥ सु० ॥ २ ॥ चंपा चंपेली आंन मोगरा, अंगीयां अंग रचाउंगी ॥ सु० ॥ ३ ॥ सीलादिक सणगार सजी नित्य, नाटिक प्रभुकूं देखाउंगी ॥ सु० ॥ ४ ॥ चिदानंद प्रभु प्राण जीवनकूं, मोतीयन थाल वधाउंगी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद चोशठमुं ॥ अजितजिणंदशुं प्रीतडी ॥ एदेशी ॥

॥ अजित अजित जिन ध्याईया, धरि हिरदेहो नवि निर्मल ध्यान ॥ हृदय सरोजामें रह्यो, सुरनी समहो लही तास विज्ञान ॥ अजित० ॥ १ ॥ कीट ध्यान भृंगी तणो, धरंतांहो ते भृंगी निदान ॥ अकल धौत स्वरूपता, लोह फरसतहो पारस पाखान ॥ अ० ॥ २ ॥ पुनपीचीचू मंदादिक सहे, चंदनहो म

लियागिरि संग ॥ सैंधव क्यारिमें पड्या, जिम पा लटेहो वस्तुनो रंग ॥ अ० ॥ ३ ॥ ध्येयरूपनी एकता, करे ध्याताहो धरे ध्यान सुजांन ॥ करे कतक मलनिन्नता, जिम नासेहो तम उगते भांन ॥अ०॥४॥ पुष्टालंबन योगथी, निरालंबताहो सुख साधन जेह ॥ चिदानंद अविचल कला, क्षणमांहे हो जिन पावे तेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद पांशठमुं ॥ निर्मल होई भजले प्रभु प्यारा ॥ ए देशी ॥

॥ लाग्या नेह जिनचरण हमारा, जिम चकोर चित्तचंद पीयारा ॥ सुनत कुरंग नाद मन लाई, प्राण तजे पण प्रेम निभाई ॥ घन तज आंनन जावत जोई, ए खग चातुक केरी वडाई ॥ ला० ॥ १ ॥ जलत निशंक दीपके मांहि, पीर पतंगकूं होतक नाहि ॥ पीडा तदपिण तिहां जाहि, संक प्रीतवस आंनत नांहि ॥ ला० ॥ २ ॥ मीन मगन नवी जलथी न्यारा, मान सरोवर हंस आधारा ॥ चोर निरखत निसि अति अंधियारा, केकी मगन फुन सुन गरजारा ॥ ला० ॥ ३ ॥ प्रणव ध्यान जिम योगी आराधे, रस रीती रस साधक साधे, अधिक सुगंध केतकीमें लाधे, मधु

कर तस संकट नवी वाधे ॥ ला० ॥ ४ ॥ जाका चित्त जांथिरतिमांने. ताका मरमतो तेह्वीज जांने ॥ जिन नक्ति ह्रिदयमें गाने, चिदानंद मन आनंद आंने ॥ ला० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७३शठमुं ॥

॥ ह्वो वांसलडी वेरण थइने लागी कां मुज केडे ॥ ए देशी॥ ह्वो प्रीतमजी प्रीतकी रीत अनित्य तजी चित्त धारीयें, ह्वो वालमजी वचन तणो अति जंमो मरम विचारीयें ॥ ए आंकणी ॥ तुमे कुमतिके घर जावो गो, निज कुलमें खोट लगावो गो, धिक् एव जगतकी खावोगो ॥ ह्वोप्री० ॥ १ ॥ तमें त्याग अमी विष पीयो गो, कुगतिनो मारग लीयो गो, एतो काज अजुगतो कीयो गो ॥ ह्वोप्री० ॥ २ ॥ एतो मोह्व रायकी चेटी ठे, शिव संपत्ति एह्वथी ठेटी ठे, एतो साकरतें गल पेटी ठे ॥ ह्वोप्री० ॥ ३ ॥ एक शंका मेरें मन आवी ठे, किण विध एमत चित्त नावी ठे, एतो फाह्वण जगमें चावी ठे ॥ ह्वोप्री० ॥ ४ ॥ सहु रिद्धि तुमारी खाईठे, करी कामण मत नरमाई ठे, तुमें पुण्य जोगे ए पाई ठे ॥ ह्वोप्री० ॥ ५ मत आंब काज बांउल बोवो, अनुपम नव विरथा नवि खोवो, अब

खोल नयण प्रगट जोवो ॥ होप्रो० ॥ ६ इण विध स
मता बहु समजाए. गुण अवगुण कही सहु दरसा
ए, सुणि चिदानंद निज घर आए ॥ होप्री० ॥ ७ ॥

॥ पद सडशहमुं ॥ गहुंली ॥

॥ चंद्रवदनी मृग लोयणी, एतो सजी शोले सण
गार रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरी हीयडे ह
रख अपार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ हांरे एतो मुक्ताफल
मूठी जरी, रचे गुंहली परम उदार रे ॥ जिहां वाणी
योजन गामिनी, घन वरसे अखंमित धार रे ॥ अ०॥
॥ २ ॥ हांरे जिहां रजत कनक रतननो, सुर र
चित त्रण प्राकार रे ॥ तस मध्य मणीसिंहासने, शो
न्नित श्री जगदाधार रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ हांरे जिहां नर
पति खगपति लषपति, सुरपति युत परखदा बार
रे ॥ लब्धि निधान गुण आगरु, जिहां गौतमसें गण
धार रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ हांरे जिहां जीवादिक नवतत्त्व
नो, षटद्रव्य नेद विस्तार रे ॥ एतो श्रवण सुणी नि
र्मल करे, निज बोधबीज सुखकार रे ॥ अ० ॥ ५ ॥
हांरे जिहां तीन छत्र त्रिभुवन उदित, सुर ढालत चा
मर चार रे ॥ सखी चिदानंदकी बंदनां, तस होजो
वारंवार रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पद अडशठमुं ॥

॥ हो कुंथुजिन मनडुं किणही न बाजे ॥ ए देशी ॥

॥ अनुनव अमृतवाणी हो पास जिन ॥अं०॥ सुरपति नये जे नागश्री मुखथी, ते वाणी चित्त आणी हो ॥पा०॥१॥ स्यादवाद मुद्रा मुद्रित शुचि, जिम सुर सरिता पाणी ॥ अंतर मिथ्या नावलता जे, बेदण तास कृपाणी हो ॥पा०॥२॥ अहोनिश नाथ असंख्य मल्या तिम, तिरबे अचरिज एही ॥ लोकालोक प्रकाश अंश जस, तस उपमा कहो केही हो ॥पा०॥३॥ विरह वियोगहरणीए दंती, संधीयें वेग मिलावे ॥ याकी अनेक अवंचकताथी, आणा विमुख कहावे हो ॥पा०॥४॥ अक्षर एक अनंत अंश जिहां, लेप रहित सुखी नांखो॥ तास क्षयोपशम नाव बंध्याथी, शुद्ध वचन रस चाखो हो ॥ पा० ॥५॥ चाख्याथी मन तृप्त थयुं नवि, गे माटे लोनावो ॥ कर करुणा करुणा रस सागर, पेट नरी ते पावो हो ॥ पा० ॥६॥ ए लवलेश लह्या विण साहिब, अशुन युगलगति वारी॥ चिदानंद वामासुत केरी, वाणीनी बलिहारी हो ॥ पा० ॥ ७॥

॥ पद उगणोतेरमुं ॥ राग मालकोश ॥

॥ पूरव पुण्य उदय करी चेतन, नीका नरजव पाया

रे ॥पू०॥ दीनानाथ दयाल दयानिधि,दुर्लभ अधिक ब
ताया रे ॥ दश दृष्टांतें दोहिला याकूं, उत्तराध्ययनें गा
या रे ॥पू०॥१॥ अवसर पाय विषय रस राचत,तेतो
मूढ कहाया रे ॥ काग उमावण काज विप्र जिम,मार
मणि पछताया रे ॥पू०॥२॥ नदी घोल पाखान न्याय
कर, अर्द्ध वाट तो आया रे ॥ अर्द्ध सुगम आगल रही
तिनकूं, जिन कछु मोह घटाया रे ॥पू०॥३॥ चेतन
चार गतिमें निश्चें, मोक्षद्वार ए काया रे ॥ करत का
मना सुर पण याकी, जिनकूं अनर्गल माया रे ॥पू०
॥ ४ ॥ रोहण गिरि जिम रतनखाण तिम, गुण सहु
यामें समाया रे ॥ महिमा मुखथी वर्णत जाकी, सुर
पति मन शंकाया रे ॥ पू० ॥ ५ ॥ कल्पवृक्ष सम सं
यम केरी, अति शीतल जिहां गया रे ॥ चरण करण
गुण धरण महामुनि,मधुकर मन लोभाया रे॥पू०॥६॥
या तन विण तिहुं काल कहो किन, साचा सुख निप
जाया रे ॥ अवसर पाय न चूक चिदानंद, सतगुरु
यों दरसाया रे ॥ पू० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद सीत्तेरमुं ॥ राग वेलावल ॥

॥ जौं लो तत्त्व न सूज पडे रे ॥जौ०॥ तौं लो मूढ ज़
रम वश जूल्यो,मत ममता ग्रही जगथी लडे रे ॥जौं०॥

॥ १ ॥ अकर रोग शुभ कंप अशुभ लख,भव सायर इण भांत रडे रे ॥ धान काज जिम मूरख खित्त हड, उखर भूमिकों खेत खडे रे ॥जौं०॥२॥ उचित रीत उ लख विण चेतन,निशिदिन खोटो घाट घडे रे॥ मस्त क मुकुट उचित मणि अनुपम, पग भूषण अज्ञान जडे रे ॥जौं०॥३॥ कुमता वश मनवक्र तुरंग जिम,ग्रही विकल मग मांहे अडे रे ॥ चिदानंद निजरूप मगन भया, भव कुतर्क तोहे नांही नडे रे ॥ जौं० ॥ ४ ॥

॥ पद एकोतेरमुं ॥ पर्यूषण स्तुति ॥

॥ मणि रचित सिंहासन, बेठा जगदाधार ॥ पर्यूष ण केरो, महिमा अगम अपार ॥ निजमुखथी दाखी, साखी सुर नर वृंद ॥ ए परव परवमां, जिम तारामां चंद ॥ १ ॥ नागकेतुनी परें, कल्प साधना कीजें, व्र त नियम आखडी, गुरुमुख अधिकी लीजें ॥ दोय भे दें पूजा, दान पंच परकार ॥ कर पडिक्कमणा धर, शी यल अखंडित धार ॥२॥ जे त्रिकरण शुद्धें, आराधे नव वार ॥ भव सात आठ अव, शेषें तास संसार ॥ सहु सूत्र शिरोमणि, कल्पसूत्र सुखकार ॥ ते श्रव ण सुणीने, सफल करो अवतार ॥ ३ ॥ सहु चैत्य जुहारी, खमत खामणां कीजें ॥ करी सामीवत्सल,

कुगति द्वार पट दीजें ॥ अठाइ महोत्सव,चिदानंद चि
त्त लाइ ॥ इम करतां संघने,शासन देव सहाइ ॥४॥

॥ पद बहोंत्तेरमुं ॥ राग शोरठ ॥

॥ क्या तेरा क्या मेरा, प्यारे सहु पडाइ रहेगा ॥ पंखी
आय फिरत दहुं दिशथी,तरुवर रेन वसेरा ॥ सहु आ
पणे आपणे मारगतें,होत जोरकी वेरा ॥प्या०॥१॥ इं
इजाल गंधर्व नगर सम,फेढ दिनाका घेरा ॥ सुपन पदा
रथ नयन खुल्या जिम, जरतन बहुविध हेरा ॥प्या०॥
२॥ रविसुत करत शीशपर तेरे,निशदिन खाना फेरा ॥ चे
त सके तो चेत चिदानंद,समज शब्द ए मेरा॥प्या०॥३॥

॥ आनंदघनजी कृत पद १०७ मुं ॥ राग आशावरी॥

॥ अवधू वैराग बेटा जाया, वाने खोज कुटुंब सब
खाया ॥अ०॥ जेणे ममता माया खाई,सुख दुःख दोनों
जाई ॥ कामक्रोध दोनोकूं खाई, खाई तृष्णा बाई ॥अ०
॥१॥ दुर्मति दादी मत्सर दादा,मुख देखतही मूआ ॥
मंगलरूपी बधाइ वांची, ए जब बेटा हूआ ॥अ०॥२॥
पुण्य पाप पाडोशी खाये,मान काम दोउ मामा ॥ मोह
नगरका राजा खाया,पीछेंही प्रेम ते गामा ॥अ०॥३॥
जाव नाम धर्यो बेटाको, महीमा वर्णव्यो न जाई॥आनं
दघन प्रजु जाव प्रगट करो,घटघट रह्यो समाइ॥अ०॥४